SPECTRUM CLASSES

REET 2021

Complete

हस्तलिखित नोट्स

PDF

Free

आज ही डाउनलोड करे

www.spectrumclasses.com

Scanned with CamScanner

RK Jangid
8209022797

PAGE NO.: 2
DATE: 07/01/2020

" सामाजिक अध्ययन का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति ", क्षेत्र, परिकल्पना

☆ सामाजिक अध्ययन की एतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकासक्रम

* मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसे ऐसा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान परिवार, समाज एवं विद्यालय का रहा है।

* भारत ऋगवैदिक काल में विश्वगुरु राष्ट्र माना जाता था क्योंकि यहाँ की सामाजिक, शैक्षिक व्यवस्था व्यवस्थित एवं सुदृढ़ थी। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना थी।

* भारत में शिक्षा के प्रभावशाली केन्द्र तक्षशिला, नालन्दा व बोधगया, मिथिला, वैदेही आदि थे।

* परन्तु भारत में अंग्रेजों का शासन हुआ जो कि फूट डालो - राज करो की नीति पर आधारित था। जिसने समाज के प्रत्येक स्तर को, धर्मों को कमजोर बना दिया तहस-नहस कर दिया।

* इसके बाद 1835 में लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने जो पाश्चात्य शिक्षा पर आधारित थी, उसने शैक्षिक व्यवस्था को नष्ट कर दिया।

* आजादी के बाद भारत में अमेरिका का एक शैक्षिक दल भारत आया जिसने सम्पूर्ण भारत के सामाजिक, शैक्षिक व्यवस्था का सर्वेक्षण किया और कहा कि दोनों ही कमजोर है जिसके कारण राष्ट्र विकसित नहीं हो सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* भारत में अमेरिकी शैक्षिक दल के सुझावों के आधार पर शैक्षिक सुदृढ़ता के लिए आयोग, नीति, समिति एवं पाठ्यक्रम विकसित किए।

* 1892 :- सामाजिक अध्ययन सर्वप्रथम अमेरिका के अंदर स्वीकार किया। जिसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान सम्मिलित थे।

Imp * 1911 :- "कमेटी ऑफ टेन" की सिफारिशों के आधार पर सामाजिक अध्ययन विषय में समाजशास्त्र विषय को सम्मिलित करने का सुझाव दिया।

Imp * 1916 सामाजिक अध्ययन विषय में समाजशास्त्र को स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

* 1921 :- राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् का गठन किया गया।

* 1934 - SSC (Social Study commision) सामाजिक अध्ययन आयोग का गठन किया गया।

Imp 1952-53 :- माध्यमिक शिक्षा आयोग। मुदालियर आयोग जिसकी अध्यक्षता डॉ लक्ष्मणस्वामी मुदालियर ने की थी जो कि मद्रास विश्वविद्यालय के उप कुलपति थे। इसकी सिफारिशों के आधार पर माध्यमिक शिक्षा की सुदृढ़ता पर बल दिया था जिसमें सामाजिक अध्ययन को अपनाने का सुझाव दिया।

* 1955 भारत में सामाजिक ज्ञान विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

RK Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Imp 1964-66 में कोठारी आयोग का गठन हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने की जो कि जोधपुर व उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे। इन्होंने एकीकृत पाठ्यक्रम को लागू करने का सुझाव दिया जिसे सामाजिक अध्ययन के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए।

* 1968 में प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई।

NPE - National policy on Education

→ इसमें अमेरिका की भांति भारत में स्कूली शिक्षा में सामाजिक अध्ययन विषय को अपनाने पर बल दिया।

* 1993 में यशपाल समिति को लागू की गई जिसने NCF-2005 के पाठ्यक्रम की अध्यक्षता की थी।

→ इस पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को व्यवस्थित रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है।

" पाठ्यक्रम - 1975, 1978, 2000, 2005 "

RK Jangid
8209022797

नोट → 19 वीं शताब्दी में सामाजिक विज्ञान पद/Term की अवधारणा ब्रिटेन में विकसित हुई थी।

नोट:→ 1920-1955 के युग को अमेरिका में सामाजिक विज्ञान का युग कहते हैं।

Scanned with CamScanner

सुकरात
↓
प्लेटो
↓
अरस्तु

सामाजिक अध्ययन का अर्थ:-

अंग्रेजी भाषा का शब्द Social Studies का हिंदी रूपान्तरण सामाजिक अध्ययन है, जिसका अर्थ होता है मानव सम्बधों का समाज के परिपेक्ष्य में अध्ययन करना

* दूसरे शब्दों में मानवीय सम्बधों का समाज के द्वारा, समाज के लिए अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है।

* सामाजिक अध्ययन की अवधारणा प्रयोजनवादियों की अमूर्त चिंतन, दार्शनिक चिंतन की विचारधारा की देन है।

* वैदिक काल के उत्तरार्द्ध में ग्रीक/यूनानी दार्शनिक सुकरात ने कहा था "मनुष्य एवं मनुष्य के पारस्परिक सम्बधों का जो अध्ययन करता है, उसका सम्बध सामाजिक अध्ययन है।"

* प्लेटो ने अपनी पुस्तक "रिपब्लिक" में लिखा है कि 'सामाजिक अध्ययन में मनुष्य, प्रकृति एवं ईश्वर से सम्बधित परस्पर अन्तः क्रियाओं का अध्ययन सम्मिलित होता है।

* ग्रीक यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इससे सम्बधित अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है।

नोट लेख:- अरस्तू "Ethics & politics"
वर्तमान में पुस्तक:- Politics

RK Jangid
8209022797

Imp प्रो. M.P. मोफात के शब्दों में "जीने की कला एक बड़ी सुंदर कला है जिसे मनुष्य सामाजिक अध्ययन के समस्त विषयों से प्राप्त है।"

प्रो. ई. वी. वेस्ले:- "सामाजिक अध्ययन उन विद्यालयी विषयों की ओर संकेत करता है जिनसे मानवीय संबधो की विवेचना की जाती है।

NCERT:- National Council of Educational Reserch & Traning.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

PAGE NO.: 6
DATE: 09/03/2020

* NCERT 1961 "सामाजिक अध्ययन, जन सामान्य (मानव), भौतिक (प्राकृतिक) एवं सामाजिक सम्बन्धों की ओर संकेत देता है जिनमें परस्पर अन्तः क्रियाओं का अध्ययन सम्मिलित होता है"

* शैक्षिक अनुसंधान एवं विश्वज्ञानकोष के अनुसार :- "सामाजिक अध्ययन इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, समाजशास्त्र विषयों का ही योग नहीं है अपितु इनमें उपलब्ध सम्बन्धित सामग्री के आधार पर सामाजिक ढाँचे का अध्ययन किया जाता है।

RK Jangid
8209022797

सामाजिक अध्ययन की विशेषताएँ

1. सामाजिक अध्ययन का सम्बन्ध मानवीय सम्बन्धों तक सामाजिक परिपेक्ष्य के अध्ययन से है।

* सामाजिक अध्ययन का सम्बन्ध सामाजिकता से है।

* सामाजिक अध्ययन में क्षेत्र विशेष, स्थानीय विशेष की सामाजिक समस्याओं, ज्वलंत समस्याओं के अध्ययन से है।

* सामाजिक अध्ययन विषय बालकों में सामाजीकरण एवं शिक्षा से सम्बन्धित होता है।

* सामाजिक अध्ययन में मनुष्य को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक अथवा भौतिक तत्वों को, सामाजिक घटनाओं को सम्मिलित किया जाता है।

* सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक है जिसमें मनुष्य को प्रभावित करने वाले समस्त घटकों का अध्ययन सम्मिलित है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र :-

1. क्षेत्र (scope) : यहाँ क्षेत्र से तात्पर्य हैं एक निश्चित परिधि अथवा सीमा का निर्धारण करना अतः सामाजिक अध्ययन का भी एक निश्चित क्षेत्र होता हैं जो विस्तृत एवं व्यापक होता हैं जिसमें अनेक विषयों का समन्वित रूप विद्यमान होता हैं जिसका उल्लेख निम्न प्रकार हैं —

RK Jangid
8209022797

सा० अध्ययन का क्षेत्र

मूल विषय	अनुषंगी विषय (नवीन सहयोगी विषय)
1. इतिहास (History)	1. समाजशास्त्र (social Study)
2. भूगोल (Geography)	2. दर्शनशास्त्र (Philosophy)
3. अर्थशास्त्र (Economics)	3. मनोविज्ञान (Psychology)
4. नागरिकशास्त्र (Civics)	

* माध्यमिक शिक्षा आयोग / मुदालियर आयोग 1952-53 में सामाजिक अध्ययन विषय क्षेत्र में निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया।
(1) इतिहास, (2) भूगोल, (3) अर्थशास्त्र (4) नागरिकशास्त्र (5) समाजशास्त्र

* कोठारी आयोग ने 1964-66 में सामाजिक अध्ययन में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र एवं नागरिकशास्त्र विषयों को स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाने पर बल दिया।

* आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सामाजिक अध्ययन में निम्नलिखित विषयो को सम्मिलित किया गया हैं।
1. इतिहास → मनुष्य के अतीत की कहानी हैं।
2. भूगोल → मानव का घर हैं। (आवास, निवास, स्थिति, अवस्थिति)
3. अर्थशास्त्र → मानव की आय-व्यय का लेखा-जोखा हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

एकीकृत अवधारणा अमेरिका से ली गई है।}

* नागरिकशास्त्र :- मानव के उत्तम नागरिकता के अधिकार व कर्तव्यों का उल्लेख
* लोकप्रशासन - मानव के नियम व कार्यप्रणाली का उल्लेख है।
* राजनीति विज्ञान - मनुष्य की कार्यप्रणाली व सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन
* समाजशास्त्र - मनुष्य के सम्बंधों का, सामाजिक समूहों एवं समाज का अध्ययन
* मनोविज्ञान - मानव के व्यवहार का क्रमबद्ध, व्यवस्थित, वैज्ञानिक अध्ययन करता है
* दर्शनशास्त्र - मनुष्य की अलौकिक, परादैहिक, आध्यात्मिक शक्ति एवं चिंतन का अध्ययन है।

RK Jangid
8209022797

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति :-

प्रकृति से तात्पर्य है एक निश्चित स्वभाव का निर्धारण होना अतः सामाजिक अध्ययन भी अपना एक निश्चित स्वभाव रखता है जिसे उसकी प्रकृति कहते हैं जिसका उल्लेख निम्नलिखित बिंदुओं में है-

1. सामाजिक अध्ययन की प्रकृति एकीकृत स्वरूप की है।
2. सामाजिक अध्ययन की प्रकृति व्यापकता लिए हुए है।
3. सामाजिक अध्ययन वैज्ञानिकता एवं सकारात्मक गुण रखता है।
4. सामाजिक अध्ययन की प्रकृति मानवीय एवं सामाजिक घटनाओं को वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक रूप में अध्ययन करती है।
5. सामाजिक अध्ययन की प्रकृति मानवीयता एवं सामाजिक मूल्यों के अध्ययन की है।
6. सामाजिक अध्ययन की प्रकृति मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करने वाली घटनाओं को तार्किक रूप में समझने की है।
7. सामाजिक अध्ययन की प्रकृति प्रत्येक विषय को समन्वित एवं सहज सम्बंध स्थापित करने की है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1. Nationalism - ism वाद - समस्या (राष्ट्रवाद) → केवल अपने राष्ट्र को महत्व देना।
2. Nationality - राष्ट्रीयता → अपने देश के साथ-साथ अन्य राष्ट्रों को भी महत्व देना।

PAGE NO.: 09
DATE 10/01/2020

सामाजिक अध्ययन का महत्व :-

1. बालकों में उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करना।
2. बालकों में राष्ट्र प्रेम, विश्वबन्धुत्व एवं भातृत्व के गुणों का विकास करना।
3. बालकों में राष्ट्रीय, - अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
4. बालकों में सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को विकसित करना।
5. बालकों में सहयोग, नेतृत्व, एवं सामूहिकता के गुणों का विकास करना।
6. बालकों में अपने चारों ओर के वातावरण, प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं चेतना लाना।
7. प्रकृति में विद्यमान उपयोगी संसाधनों के बारे में समझ विकसित करना।
8. मानवीय सम्बधों एवं सामाजिक सम्बधों के प्रति समझ विकसित करना।
9. बालकों में समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्याओं, सामाजिक मुद्दों, समसामयिक घटनाओं के प्रति जागरूकता लाना।
10. बालकों में नैतिक, चारित्रिक मूल्यों का विकास करना और राष्ट्रीयता की भावना विकसित करना।

RK Jangid
8209022797

कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएँ

1. **शिक्षण :-** यह एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जो निरन्तर गतिशील, परिवर्तनशील एवं प्रगतिशील रहती है।
   → शिक्षण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जो सुनियोजित ढंग से संचारित होती है सदैव एवं सर्वत्र रूप में होती है।
   → शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक कक्षा-कक्ष मे शिक्षण के माध्यम से छात्रों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन लाता है। (ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक पक्ष में)

Scanned with CamScanner

→ शिक्षण शास्त्री मॉरिसन के शब्दों में "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें एक अधिक परिपक्व व्यक्ति (शिक्षक), कम परिपक्व व्यक्ति (छात्र) को और अधिक परिपक्व बनाने का प्रयास किया जाता है शिक्षण कहलाता है।

→ जॉन एड्म्स :- इन्होंने शिक्षण को द्विमुखी या द्विध्रुवीय प्रक्रिया कहा है। जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों की परस्पर अन्तक्रिया से सम्पादित होता है शिक्षण कहलाता है।

द्विमुखी / द्विध्रुवीय

शिक्षक ⇄ छात्र

↓

अन्तः क्रिया

↓

शिक्षण

जॉन डी.वी के शब्दों में " इन्होंने शिक्षण को त्रिमुखी अथवा त्रिध्रुवीय प्रक्रिया कहा है। जो शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम की परस्पर अन्तक्रिया से सम्पादित होती है।

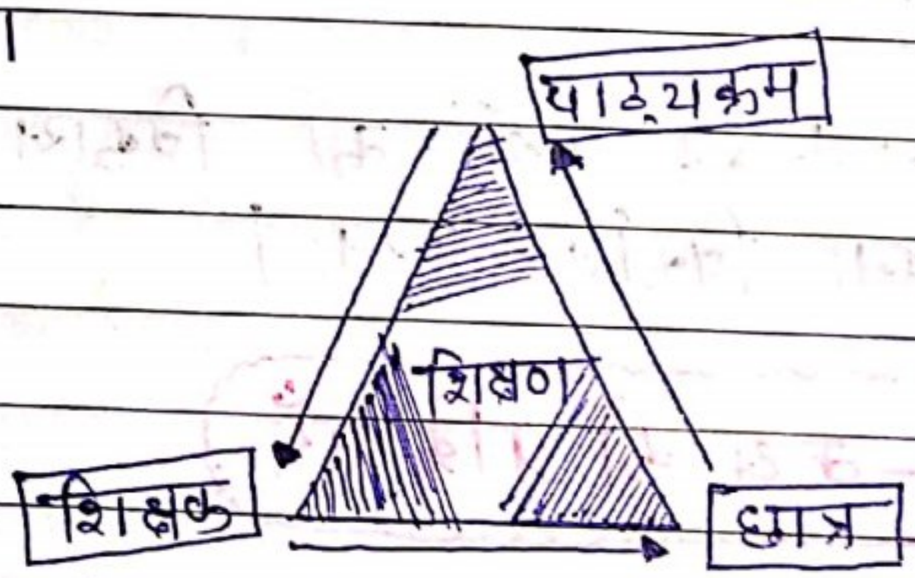

RK Jangid
8209022797

Imp

शिक्षणशास्त्री प्रो. बी. एस. ब्लूम :- ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए तीन बातों का होना आवश्यक बताया।

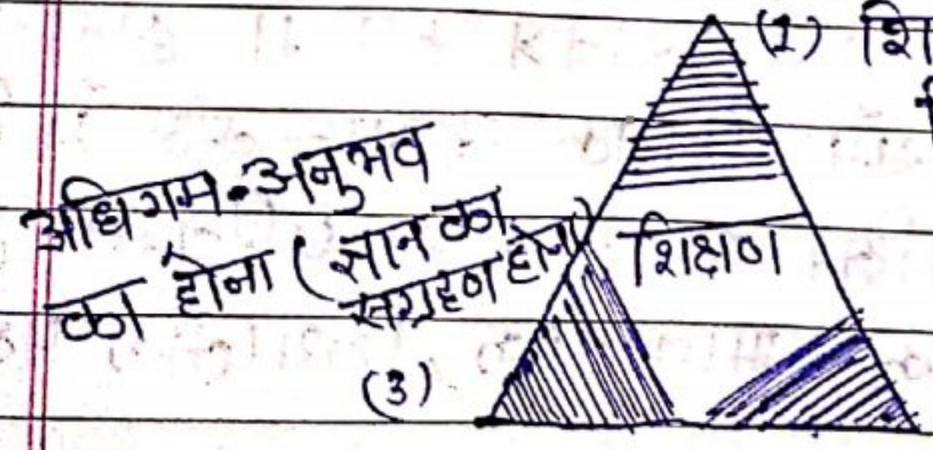

शिक्षण की विशेषताएँ :-

- → शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- → शिक्षण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
- → शिक्षण निरन्तर चलने वाली गतिशील एवं प्रगतिशील प्रक्रिया है।
- → शिक्षण सुनियोजित प्रक्रिया है।
- Imp → शिक्षण विज्ञान एवं कला दोनो है।
- → शिक्षण अमूर्त एवं सूक्ष्म प्रक्रिया है।
- → शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- → शिक्षण एक व्यवसायोन्मुख प्रक्रिया है।
- → शिक्षण, शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम के बीच परस्पर अन्तः क्रिया से सम्पन्न होता है।
- → शिक्षण बालकों में सर्वांगीण विकास लाता है। (ज्ञान, भाव, क्रिया)

नोट :→ शिक्षण मूर्त प्रक्रिया नही है।

RK Jangid
8209022797

शिक्षण

भेद	चर / कारक	स्तर	सोपान
③	③	③	③
→ एकतंत्रात्मक	→ स्वतंत्र चर	→ बोध स्तर	→ निदानात्मक
→ प्रजातंत्रात्मक	→ आश्रित चर	→ स्मृति स्तर	→ उपचारात्मक
→ हस्तक्षेप रहित	→ मध्यस्थ चर	→ चिंतन	→ मूल्यांकनात्मक

शिक्षण के भेद :

1. एकतंत्रात्मक शिक्षण :- यह शिक्षण का वह भेद है जिसमें शिक्षक सक्रिय एवं प्रधान होता है छात्र की भूमिका मूकदर्शक, निष्क्रिय होती है।

- → यह शिक्षण प्राचीन एवं परम्परागत है, जिसमें शिक्षक केन्द्रित होता है।
- → इसमें शिक्षक स्वयं के अनुसार ही शिक्षण की योजना बनाता है।
- → इसमें ज्ञानात्मक पक्ष का विकास होता है।

Scanned with CamScanner

→ इसमें छात्रों को कक्षा कक्षा में में शिक्षक से प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता <u>नहीं</u> होती है।

→ इसमें शिक्षक पाठ्य पुस्तक को स्मरण कराता है रटने पर बल देता है।

→ इस शिक्षण को अलोकतंत्रात्मक, निरकुंशतावादी प्रभुत्ववादी एवं अमनोवैज्ञानिक व अवैज्ञानिक शिक्षण शिक्षण भी कहते हैं।

RK Jangid
8209022797

2. प्रजातंत्रात्मक शिक्षण

→ यह शिक्षण का आधुनिक भेद है जिसमे शिक्षक और छात्र दोनो ही सक्रिय होते हैं परन्तु प्रधान भूमिका छात्र की होती है।

→ शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक के रूप में होती है।

→ इस शिक्षण में एकतंत्रात्मक शिक्षण के विपरित विशेषताएं विद्यमान होती है।

→ इसमें बालकों का सर्वांगीण विकास होता है (ज्ञान, भाव, क्रिया) और विद्यार्थी स्वयं क्रिया करके सीखता है।

→ इसमें शिक्षक छात्रों के अनुसार ही शिक्षण की योजना बनाता है और छात्रों को प्रश्न पुछने की <u>स्वतत्रंता होती</u> है।

→ इस शिक्षण को लोकतंत्रात्मक, मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक शिक्षण भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

RK Jangid
8209022797

PAGE NO.: 13
DATE: 17/01/2026

(3) हस्तक्षेप रहित :- यह शिक्षण का वह भेद है जिसमें छात्र सक्रिय एवं प्रधान होता है।

→ इसमें विद्यार्थी स्वयं शिक्षक के बिना हस्तक्षेप के अपने घर पर उपलब्ध सामग्री को स्वाध्याय करते हुए अधिगम करता है जिसका माध्यम दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, पत्राचार शिक्षा-प्रणाली, खुला विद्यालय प्रणाली है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शिक्षण के चर :-

1. स्वतंत्र :- यह शिक्षण का वह चर है जिसमें शिक्षक सक्रिय एवं प्रधान स्वयं शिक्षक होता है। वह स्वयं के अनुसार ही शिक्षण की योजना बनाता है।

नोट: स्वतंत्र चर की समस्त विशेषताएं एकतंत्रात्मक शिक्षण के समान है।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

2. आश्रित चर :-
> प्रधान छात्र होता है।

> यह शिक्षण का वह चर है जिसमें सक्रिय एवं प्रधान छात्र होता है परन्तु वह शिक्षक पर आश्रित है क्योंकि शिक्षक को ही अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त होता है।

3. मध्यस्थ चर :- (पाठ्यक्रम)
> यह शिक्षण का वह चर है जो कक्षा-कक्ष में शिक्षक और छात्रों के मध्य योजक कड़ी का काम करता है जिसे पाठ्यक्रम कहते है। जिसके अभाव में विद्यार्थियों में ज्ञानात्मक पक्ष का विकास सम्भव नही है।

Scanned with CamScanner

स्मरण शक्ति का विकास नही होगा, मानसिक बौद्धिक विकास नहीं होगा।

नोट:- यदि परीक्षा के प्रश्न पत्र में मध्यस्थ चर पूछा जाये तो उत्तर के प्रथम विकल्प की वरीयता में पाठ्यक्रम का चयन करें। इसके विकल्प में न होने पर कक्षा-कक्ष, शिक्षण सहायक सामग्री, शिक्षण विधियों में से कोई एक विकल्प में होगा उसमें वही उत्तर मान्य होगा।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

* शिक्षण के स्तर

1. स्मृति स्तर:- प्रवर्तक- हरबर्ट

* यह शिक्षण का प्रथम एवं निम्न स्तर है जिसमें शिक्षक शिक्षण के माध्यम से बालकों में स्मरण शक्ति का विकास करता है।
* यह शिक्षण प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए (कक्षा 1-5 तक) अधिक उपयोगी है क्योंकि उनमें रटने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

2. बोध स्तर शिक्षण (understanding Level teaching)
मॉरीसन

* यह शिक्षण का मध्य स्तर है जिसमें शिक्षक शिक्षण के माध्यम से सम्बधित पाठ्यवस्तु के बारे में सम्बध विकसित करता है, व्याख्या, वर्णन, विश्लेषण करता है, तुलनात्मक वर्गीकरण करता है।
* यह शिक्षण प्रमुखतः उच्च प्राथमिक स्तर के (UPS) (कक्षा 6-8) के बालकों के लिए अधिक उपयोगी है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3. चिंतन स्तर शिक्षण (Remind Level Teaching)
प्रवर्तक - शिक्षणशास्त्री हण्ट
→ यह शिक्षण का सर्वोच्च उच्च स्तर है जिसे अन्तिम स्तर भी कहते है।
→ इस शिक्षण में शिक्षक बालकों में अमूर्त तार्किक चिंतन के गुणों का विकास करता है।
→ स्वयं समस्या समाधान के गुणों को विकसित करता है।
→ यह शिक्षण माध्यमिक स्तर विद्यालयों के लिए (कक्षा 9-10) तक के लिए एवं उच्च स्तरीय कक्षाओं के लिए भी उपयोगी है।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

शिक्षण के सोपान
1. निदानात्मक सोपान (Diagnostic)

→ यह शिक्षण का प्रथम निम्नस्तरीय सोपान है जिसे शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के पूर्व अथवा प्रारम्भ में अपनाता है।
→ इसमें शिक्षक छात्रों के पूर्वी ज्ञान का पता लगाता है, समस्या के कारणों का पता लगाता है अथवा छात्रों के अधिगम ना होने के कारणों का पता लगाता है।

2. उपचारात्मक सोपान :-
→ यह शिक्षण का मध्य सोपान है जिसे शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा-कक्ष में उपयोगी बनाता है जिसके माध्यम से समस्या का समाधान करता है।
Imp → उपचारात्मक शिक्षण में निदानात्मक सोपान स्थित है।

→ उपचारात्मक शिक्षण समस्यात्मक बालकों के लिए अधिक उपयोगी है।

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 16
DATE: 18 / 04 / 2020

3. मूल्यांकनात्मक शिक्षण :-

→ यह शिक्षण का अन्तिम एवं सर्वोच्च स्तरीय सोपान है जिसे शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के अन्त में अपनाता है।

→ जिसके माध्यम से शिक्षक छात्राओं की सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र में प्राप्त उपलब्धियों का पता लगाता है। क्या सीखा और क्या नही सीखा का आकलन ही मूल्यांकन है।

→ मूल्यांकन में निदान और उपचार दोनों सम्मिलित होते है।

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य

→ शिक्षण उद्देश्य वे होते है जिनकी प्राप्ति शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान शिक्षण के माध्यम से प्राप्त करता है।

→ प्रो. बी.डी. भाटिया के शब्दों में "शिक्षण के उद्देश्य अथवा लक्ष्य के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान होता है जो अपने साध्य अथवा मंजिल को नही जानता, विद्यार्थी उस पतवार विहिन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर लग जायेगी।

→ शिक्षण के उद्देश्यों को दो भागों में वर्गीकृत किया है।
1. सामान्य शिक्षण उद्देश्य
2. विशिष्ट शिक्षण उद्देश्य

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 17
DATE: 20/01/2020

	सामान्य शिक्षण उद्देश्य	विशिष्ट शिक्षण उद्देश्य
1.	विद्यालय	→ कक्षा- कक्ष
2.	सहशैक्षणिक	→ शैक्षिक + सहशैक्षिक
3.	दीर्घकाल	→ अल्पकाल
4.	प्राप्य और अप्राप्य	→ सदैव प्राप्य
5.	सृजनात्मकता से रचनात्मकता	→ सर्वांगीण → पुस्तकीय ज्ञान → अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन लाते हैं (ज्ञानात्मक + क्रियात्मक + भावात्मक)

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

1 सामान्य शिक्षण उद्देश्य

→ बालकों में उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करना।
→ बालकों में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का विकास करना।
→ बालकों में विश्वबन्धुत्व एवं भातृत्व की भावना का विकास करना।
→ बालकों में देशप्रेम & राष्ट्रभक्ति की भावना विकसित करना।
→ बालकों में राष्ट्रीयता की भावना, सहयोग, अपनत्व की भावना का विकास करना।
→ बालकों में मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों को विकसित करना।
→ बालकों में अपने चारों ओर के वातावरण, पर्यावरण सरक्षण के प्रति जागरूकता लाना।
→ बालकों में सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करना।
→ बालकों में मूल कर्त्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति जागरूकता लाना।
→ बालकों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना।
→ धरोहरों की रक्षा करना।
→ स्वच्छता।

Scanned with CamScanner

शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य:-

→ ये वे उद्देश्य होते है जिनका सम्बध पाठ्यवस्तु अथवा पुस्तकीय विषयवस्तु से होता है।

→ जिनकी प्राप्ति विद्यार्थी कक्षा-कक्ष में अल्पकाल में सदैव करता है। जिन्हे तीन भागों में वर्गीकृत किया है: 1. ज्ञानात्मक, 2. भावात्मक, 3. क्रियात्मक

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

• शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण सर्वप्रथम शिक्षणशास्त्री प्रो॰ बी. एस. ब्लूम ने किया था। जिसके विकास में और अधिक महत्वपूर्ण योगदान शिक्षणशास्त्री क्राथवाल, मसीहा एवं सिम्पसन ने दिया था। अत: शिक्षण उद्देश्यों को तीन भागों में वर्गीकृत किया है।

शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य

① ज्ञानात्मक पक्ष	② भावात्मक पक्ष	③ क्रियात्मक (मनोशारीरिक)
प्रो॰ B.S ब्लूम ⇓ स्मृतिकरण तर्क, बुद्धि, चिंतन, विवेक	क्रॉथवाल एवं मसीहा (1964) हृदयान्तीकरण भाव, संवेग, संवेदना, सुःख	E.J सिम्पसन (1969) व्यवहार होना, क्रिया होना, कार्य का करना
⑥	⑥	⑥
[ज्ञा, बो, ज्ञा विसम]	[आ अ अ विवच]	[उका नि सस्वआ]
1. ज्ञान 2. बोध/अवबोध] निम्न स्तर	1. आग्रहण 2. अनुक्रिया] निम्न स्तर	1. उद्दीपन 2. कार्यवाही] निम्न
3. ज्ञानोपयोग/अनुप्रयोग 4. विश्लेषण] - मध्यस्तर	3. अनुमूलन 4. विचारना] मध्य स्तर	3. नियंत्रण 4. समायोजन] मध्य
5. संश्लेषण 6. मूल्यांकन] उच्च स्तर	5. व्यवस्थापन 6. चरित्र निर्माण] उच्च स्तर	5. स्वभावीकरण 6. आदत निर्माण] - उच्च

नोट :- ज्ञानात्मक पक्ष का सर्वोच्च/उच्च स्तर मूल्यांकन होगा, भावात्मक पक्ष का चरित्र निर्माण एवं क्रियात्मक पक्ष का आदत निर्माण होता है।

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 19
DATE: 24/01/2020

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्य

1. बी एस ब्लूम	NCERT	RCEM
ज्ञान	ज्ञान	ज्ञान
बोध / अवबोध	बोध	बोध
ज्ञानोपयोग / अनुप्रयोग	ज्ञानोपयोग	ज्ञानोपयोग
विश्लेषण	कौशल	सृजनात्मकता
संश्लेषण	अभिरुचि	
मूल्यांकन	अभिवृत्ति	

RCEM :- Regional college of Education of Masure (K)
(क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक))

नोट RCEM शिक्षण संस्थान के द्वारा ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए B.S. ब्लूम के विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन एवं NCERT के कौशल, अभिरुचि एवं अभिवृति के स्थान पर सृजनात्मकता के विकास पर बल दिया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 20
DATE: 24/07/2020

शिक्षण का ज्ञानात्मक पक्ष
(NCERT 1961 के अनुसार)

1. ज्ञान :→
2. बोध / अवबोध] - अदा (INPUT)
3. ज्ञानोपयोग / अनुप्रयोग] प्रक्रिया (PROCESS)
4. कौशल
5. अभिरुचि] प्रदा (OUTPUT)
6. अभिवृत्ति

* प्रो. बी. एस. ब्लूम का "नामकरण मॉडल"
  → अंग्रेजी नाम- Texonamy model (टेक्सोनामी)
  → Tecknonamy model (टेक्नोनॉमी मॉडल)

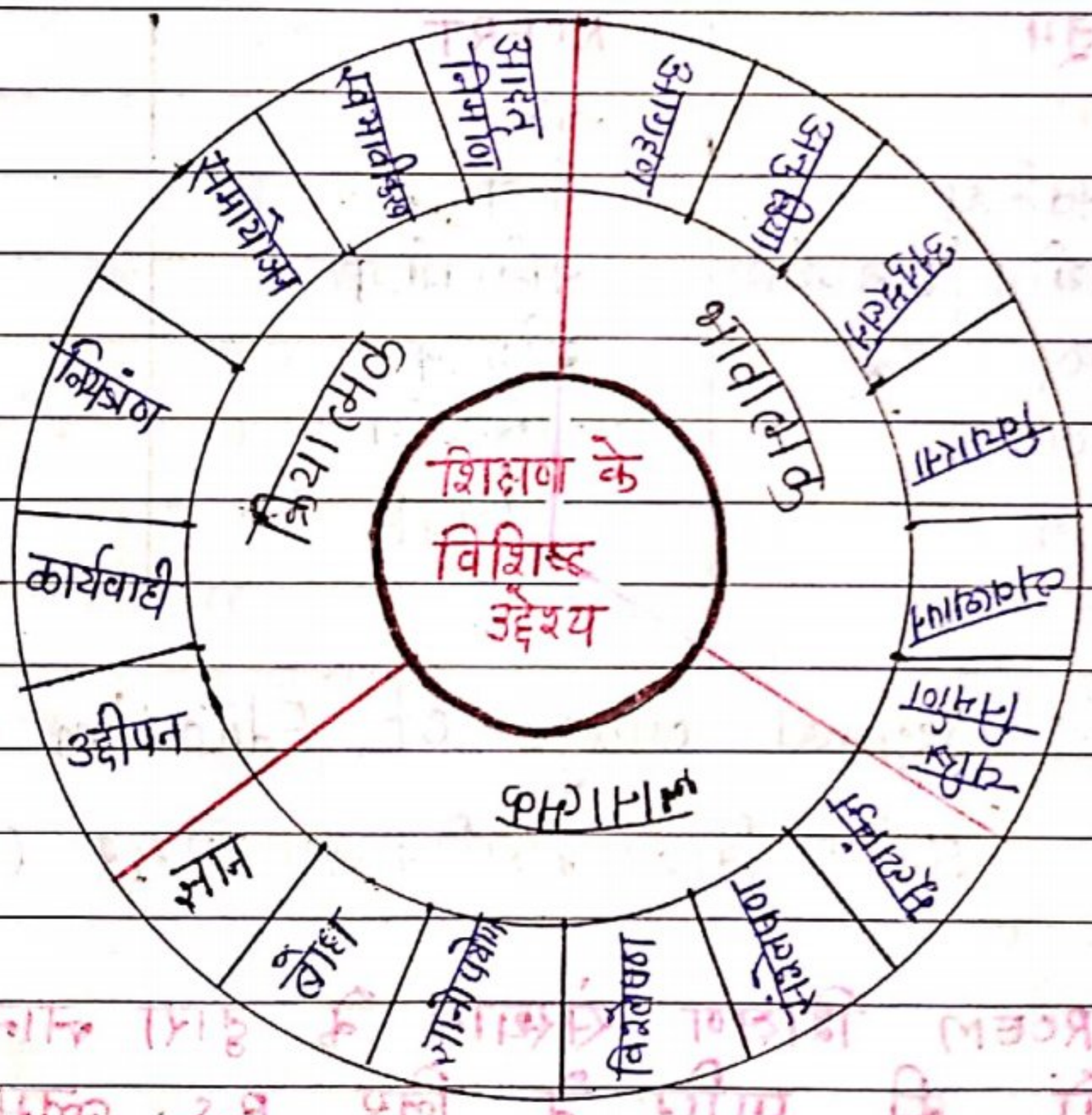

चित्र: B.S ब्लूम का नामकरण मॉडल

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 21
DATE: 25/01/2026

सामाजिक अध्ययन का ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्य

1. NCERT 1961 के अनुसार :-

क्र.स.	प्राप्य शिक्षण उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
1.	ज्ञान (Knowledge)	→ प्रत्यास्मरण → पहचान, परिचय, प्रत्याभिज्ञान → जानकारी * विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन में उपलब्ध विषय वस्तु के माध्यम से। जैसे अवधारणा, परिभाषा, अव्यव, सूत्र, सिद्धान्त, नियम संकेत, चिह्न प्रतीक, कारण, परिणाम इत्यादि के बारे में प्रत्यास्मरण, प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगें। पहचान, परिचय एवं जानकारी दे सकेंगें।
2.	बोध / अवबोध (Understanding)	* विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन में उपलब्ध सामग्री / विषयवस्तु के माध्यम से उसके बारे में समझ विकसित कर सकेंगें। * वर्णन, विश्लेषण, व्याख्या कर सकेंगे। * तुलना, अन्तर, वर्गीकरण कर सकेंगे, उदाहरणों से समझ सकेंगें। नोट :- त्रुटि / समस्या के कारणों का पता लगा सकेंगें।
3.	ज्ञानोपयोग / अनुप्रयोग (Uses / Applied)	* विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन की विद्यमान विषयवस्तु के माध्यम से उसे नवीन परिस्थितियों में उपयोगी बना सकेगा, दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकेगा, नवीन उदाहरणों से समझ सकेगा, नवीन परिभाषा विकसित कर सकेगा, अन्तर-तुलना वर्गीकरण कर सकेगा। निष्कर्ष मूल्यांकन निकाल सकेगा।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

स्वयं समस्या का समाधान कर सकेगा।

नोट:- क्षति/ समस्या का समाधान करना ज्ञानोपयोग है।

4. कौशल (Skills) — * विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन की विषय वस्तु को शीघ्रता, सरलता, स्पष्टता एवं रोचकता से उपयोगी बना सकेगा।
* वह इसे रेखाचित्र, मानचित्र, चार्ट, मॉडल, ग्राफ आदि के माध्यम से स्पष्ट कर सकेगा, तालिका बना सकेगा। पैमाना मानकर कागज अथवा बोर्ड पर रेखाचित्र, मानचित्र बना सकेगा।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

5. अभिरुचि (Aptitude)
अभि + रुचि
Self + Interest — जन्मजात / अर्जित
स्व + रुचि
आत्म + रुचि

* विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन में उपलब्ध विषयवस्तु में अधिक से अधिक रुचि ले सकेगा, उससे सम्बन्धित नवीन साहित्य को वाचनालय एवं पुस्तकालय में पढ़ सकेगा, इससे सम्बन्धित महापुरुषों एवं शासकों की जीवनीयों को पढ़ सकेगा। संचालित होने वाली मुद्रा और सिक्कों को एकत्रित कर सकेगा। इनकी छायाकिंत फोटो को काटकर अच्छे से चिपकाकर एलबम बना सकेगा, विद्यार्थी शिक्षक से अधिक से अधिक प्रश्न पूछ सकेगा। जिज्ञासा शान्त कर सकेगा, कमजोर सहपाठी का सहयोग कर सकेगा, शिक्षक और छात्रों के मध्य मधुर सम्बन्ध विकसित कर सकेगा।

6. अभिवृत्ति (Attitude) अभि + वृत्ति ↓ ↓ स्वयं का देखने का नजरिया:	* विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन विषय को पढ़कर वातावरण में घटित घटनाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेगा, * विषम परिस्थितियों में विचलित नहीं होगा। * अनुशासन बना सकेगा, धैर्य रख सकेगा निर्णय क्षमता विकसित कर सकेगा।

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण सूत्र:-

शिक्षण सूत्रों का सर्वप्रथम सूत्रपात दार्शनिक रूसो एवं कॉमेनियस ने किया था। जिनको शिक्षण में उपयोगी शिक्षणशास्त्रियों ने बनाया था। जैसे - जॉन डीवी, पेस्टोलोजी, हरबर्ट, बी. एस. ब्लूम आदि है।

* शिक्षण सूत्रों के प्रयोग के माध्यम से शिक्षक सम्बधित विषयवस्तु को / पाठ्यवस्तु को कक्षा- कक्ष में छात्रों के लिए सरल, स्पष्ट, स्थायी एवं प्रभावी बना देता है। जिनका उल्लेख निम्न प्रकार है -

शिक्षण सूत्र

1.	ज्ञात से अज्ञात	अज्ञात से ज्ञात की ओर
2.	मूर्त से अमूर्त	अमूर्त से मूर्त की ओर
3.	प्रत्यक्ष से प्रमाण	प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर
4.	उदाहरण से नियम	नियम से उदाहरण की ओर
5.	विशेष से सामान्य	सामान्य से विशेष की ओर
6.	निकट से दूर	दूर से निकट की ओर
7.	पूर्ण से अंश	अंश से पूर्ण की ओर
8	स्थूल से सूक्ष्म	सूक्ष्म से स्थूल की ओर
9	सरल से जटिल	जटिल से सरल की ओर
10	अनुभव से तार्किकता	तार्किकता से अनुभव की ओर

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शिक्षण के सिद्धान्त :-

शिक्षण सिद्धान्तों का सर्वप्रथम प्रतिपादन शिक्षणशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने किया था। जिसमें प्रमुख योगदान शिक्षणशास्त्री, हरबर्ट, पेस्टॉलॉजी, किलपैट्रिक, ब्लूम आदि का रहा है और मनोवैज्ञानिक E.L. थार्नडाइक (S.R. थ्योरी) B.F. स्कीनर (R.S थ्योरी) C.L हल (SOR थ्योरी) आदि का रहा है।

* शिक्षण सिद्धान्त वे होते हैं जिनका प्रयोग शिक्षक कक्षा-कक्ष में शिक्षण प्रक्रिया के दौरान सम्बंधित पाठ्यवस्तु को छात्रों को समझाने के लिए सार्वभौमिक रूप में सदैव और सर्वत्र उपयोगी बनाता है जिससे विषयवस्तु सरल स्पष्ट और बोधगम्य हो जाती है जिनका उल्लेख निम्न प्रकार है-

Notes By R.K. Jangid 8209022797

शिक्षण के सिद्धान्त
2 प्रकार

सामान्य शिक्षण सिद्धान्त	मनोवैज्ञानिक शिक्षण सिद्धान्त
ये वे सिद्धान्त होते हैं जिनका प्रयोग शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा-कक्ष में सदैव एवं सर्वत्र रूप मे, वैज्ञानिक रूप में प्रयोग करता रहा है।	ये वे सिद्धान्त होते हैं जो मनोवैज्ञानिकों की विचारधारा से विकसित हैं, जिनका मानना है कि शिक्षक को शिक्षण कराने से पहले छात्रों को सीखने के लिए शारीरिक, मानसिक रूप से अथवा मनोवैज्ञा. रूप से तत्पर करना चाहिए। जिसमें प्रमुख मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक, स्कीनर हल, पॉवलाव आदि हैं।
1. शिक्षण के उद्देश्यों के निर्धारण का सिद्धान्त।	1. रुचि एवं अभिप्रेरणा का सिद्धान्त
2. नियोजन का सिद्धान्त	2. उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धान्त
3. चयन का सिद्धान्त	3. क्रिया प्रसूत अनुबंधन का सिद्धान्त
4. लचीलेपन का सिद्धान्त	4. क्रियाशीलता का सिद्धान्त / क्रिया करके सीखना
5. वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धान्त	5. मनोरंजन एवं अवकाश के सदुपयोग का सिद्धान्त
6. वर्णन- विश्लेषण का सिद्धान्त	6. सामाजीकृत, स्वअभिव्यक्ति के शिक्षण का सिद्धान्त
7. पूर्वज्ञान का सिद्धान्त	
8. सहसम्बवाद का सिद्धान्त	
9. बालकेन्द्रित का सिद्धान्त	

Scanned with CamScanner

1. लोकतंत्रात्मक शिक्षण का सिद्धान्त	7. तत्परता एवं अभ्यास का सिद्धान्त

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ
The Teaching Method of Social Science.

* शिक्षण विधियों का सूत्रपात दार्शनिक रूसो एवं कॉमेनियस की अमूर्त विचारधारा से हुआ था। जिसको शिक्षण में व्यवहारिक एवं मूर्त रूप शिक्षण शास्त्री पेस्टोलॉजी ने 1800 ई० से 1825ई० के मध्य दिया था। जिसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान जॉन डीवी, किलपैट्रिक, हरबर्ट, ब्लूम, सिम्पसन, मसीहा आदि का रहा है।

* शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन के लिए, शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, बालकों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन के लिए शिक्षक कक्षा-कक्ष में सम्बधित पाठ्यवस्तु को छात्रों के लिए सरल, स्पष्ट, प्रभावी और स्थायी बनाने के लिए जिस तकनीक, पद्धति, विधि, युक्ति, व्यूहरचना को शिक्षण में उपयोगी बनाता है, शिक्षण विधि कहलाती है।

* माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 के अनुसार "शिक्षा में गुणात्मक विकास के लिए प्रत्येक विद्यालयों को शिक्षण में उपयोगी बनाना चाहिए चाहे वे अच्छी या बुरी हो इनका प्रयोग शिक्षक एवं छात्रों के मध्य सम्बधों में अवयवी/सावयवी ढंग से घनिष्ठता उत्पन्न करता है।"

* श्रीमती टी० एच० कोचर के शब्दों में "जिस प्रकार एक सैनिक को युद्ध लड़ने से पहले समस्त हथियारों का ज्ञान होना चाहिए उसी प्रकार से एक शिक्षक को शिक्षण से पहले

Scanned with CamScanner

रूसो की पुस्तकें (1) The Emile
(2) The social contract

शिक्षण विधि / पद्धति का ज्ञान होना चाहिए। कौनसी परिस्थिति में कौनसे विषय के लिए कौनसी विधि प्रभावी होगी का ज्ञान होना चाहिए।

शिक्षण की विधियों को दो भागों में वर्गीकृत किया है।

शिक्षक केन्द्रित शिक्षण विधि

→ सक्रिय + प्रधान = शिक्षक
→ प्राचीन / परम्परागत
→ प्रभुत्ववादी
→ अलोकतंत्रात्मक
→ मौखिक सम्प्रेषण पर बल
→ स्मरण शक्ति पर बल
→ पाठ्यपुस्तक केन्द्रित है।
→ ज्ञानात्मक पक्ष का विकास
→ अमनोवैज्ञानिक एवं अवैज्ञानिक
→ विधि के नाम (1) पाठ्यपुस्तक शिक्षण विधि
(2) व्याख्यान विधि
(3) व्याख्यान - प्रदर्शन विधि
(4) संश्लेषण विधि
(5) निगमन विधि
(6) कहानी विधि

बालकेन्द्रित शिक्षण विधि (सूत्रपात - रूसो)

→ शिक्षक एवं छात्र दोनों सक्रिय + प्रधान छात्र होता है।
→ आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक उपयोगी।
→ क्रियाशीलता पर निर्भर (क्रिया करके सीखने पर बल देती है।)
→ लोकतंत्रात्मक / प्रजातंत्रात्मक
→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक है।
→ शिक्षक शिक्षण में बालकों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखता है।
→ इसमें बालक का सर्वांगीण विकास होता है।

विधि के नाम (1) खेल विधि
(2) प्रायोजना विधि
(3) ह्यूरिस्टिक विधि
(4) समस्या समाधान विधि
(5) परिचर्चा / संवाद विधि
... त्रीय पर्यटन विधि
... भिनय / नाटक विधि
... क्रमित अनुदेशन विधि
... स्तिष्क उद्वेलन / उत्पलावन विधि
(10) आगमन विधि
(11) विश्लेषण विधि

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

1. पाठ्यपुस्तक शिक्षण विधि (Text Book Teaching Method)

→ यह प्राचीन एवं परम्परागत विधि है जिसमें शिक्षक स्वयं सक्रिय एवं प्रधान होता है विद्यार्थी मूकदर्शक श्रोता होता है जो निष्क्रिय होता है।

→ यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बंधित पाठ्यवस्तु को / विषयवस्तु को / समस्या को / प्रकरण को कक्षा-कक्ष में पाठ्यपुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत करता है और स्वयं समस्या का समाधान करता है।

→ इस विधि में विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक को पढ़ते हैं, स्वाध्याय करते हैं, स्मरण शक्ति का विकास करते हैं।

→ पाठ्यपुस्तक विधि को वर्णन प्रणाली के आधार पर चार भागों में वर्गीकृत किया है

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

(1.) स्मृतिकरण वर्णन प्रणाली वर्गीकरण
(2) व्याख्या - वर्णन - विश्लेषण वर्गीकरण
(3) शिक्षक - छात्र - पाठ्यपुस्तक वर्णन प्रणाली वर्गीकरण
(4) उप - प्रभाग वर्णन प्रणाली वर्गीकरण

1. स्मृतिकरण वर्णन प्रणाली :- इस प्रणाली में शिक्षक कक्षा-कक्ष में छात्रों को पाठ्यपुस्तक को अक्षरशः रटने के लिए कहते हैं।

2. व्याख्या-वर्णन-विश्लेषण :- इस प्रणाली में शिक्षक कक्षा में आता है पाठ्यपुस्तक को निकलवाता है और प्रकरण का वर्णन विश्लेषण और व्याख्या करता है और फिर कहता है कि कक्षा में याद कर, घर से याद करके आना, अगले दिन कक्षा-कक्ष में सुनुंगा।

3. शिक्षक - छात्र - पाठ्यपुस्तक :- इस प्रणाली में शिक्षक और छात्र दोनों ही पाठ्यपुस्तक का अपने- अपने घर पर स्वाध्याय करते हैं और अगले दिन शिक्षक कक्षा- कक्ष में छात्रों से प्रश्न के उत्तर पूछता है।

Scanned with CamScanner

4. उप-प्रश्नांग वर्णन प्रणाली :- इस प्रणाली में शिक्षक कक्षा-कक्ष में आता है छात्रों से पाठ्यपुस्तक निकलवाता है और कहता है कि "तू पढ़ मैं सुनूं", "मैं पढ़ूं तू सुन" और "तुझे समझाऊँ"।

पाठ्यपुस्तक विधि के गुण :-

→ यह विधि समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक है।
→ समय, श्रम और धन की दृष्टि खर्चीली एवं लम्बी विधि नहीं है।
→ यह विधि बालकों में पढ़ने की प्रवृत्ति एवं स्वाध्याय के गुणों का विकास करती है।
→ यह विधि बालकों में स्मरण शक्ति का विकास करती है। पक्षपात उत्पन्न करने का अवसर नहीं देती है।
→ इस विधि से बालकों में ज्ञानात्मक पक्ष का विकास होता है।
→ यह विधि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है।
→ यह विधि मन्द बुद्धि, पिछड़े, कमजोर बालकों के लिए उपयोगी है।
→ यह विधि गणित, विज्ञान, प्रायोगिक विषय (SST के भूगोल, चित्रकला, गृहविज्ञान) एवं भाषायी साहित्य के लिए अधिक उपयोगी है।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

पाठ्यपुस्तक विधि के दोष :-

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि नहीं है।
→ यह विधि बालकों में रटने की प्रवृत्ति का विकास करती है।
→ क्रिया करके सीखने का अवसर नहीं देती है।
→ इस विधि से प्राप्त ज्ञान अस्थाई प्रकृति का होता है।
→ यह विधि भावात्मक, क्रियात्मक पक्षों का विकास नहीं करती है।
→ यह विधि बालको में तर्कशक्ति, चिन्तनशक्ति, कल्पनाशक्ति सृजनात्मकता, रचनात्मकता एवं खोजी प्रवृत्ति के गुणों

Scanned with CamScanner

→ अनुशासन हीनता का अवसर देती है।
का विकास नहीं करती है।
→ प्रतिभाशाली बालकों के लिए अधिक उपयोगी नहीं है।
→ अत्यधिक छोटी कक्षा एवं उच्चस्तरीय कक्षा के बालकों के लिए उपयोगी नहीं है।
→ यह विधि पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट कराने में पूर्णतः सहायक नहीं है।

2. व्याख्यान शिक्षण विधि (Lecture Teaching method)

- यह शिक्षण की प्राचीन, परम्परागत एवं सर्वाधिक रूप से उपयोग में ली जाने वाली विधि है जिसमें शिक्षक स्वयं सक्रिय और प्रधान होता है। विद्यार्थी निष्क्रिय एवं मूकदर्शक श्रोता होता है। जो केवल सुनकर सीखता है।
- यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बधित समस्या अथवा पाठ्यवस्तु को कक्षा-कक्ष में प्रस्तुत करता है और उसका समाधान क्रमबद्ध रूप में, शाब्दिक रूप मे, स्वयं करता है।
- इस विधि में बालक स्मरण शक्ति का विकास करते हुए सम्प्रेषण एवं अभिव्यक्ति कौशलों का विकास करता है।

व्याख्यान विधि के पद/चरण/सोपान

1. पूर्व पद:→ इसके अन्तर्गत शिक्षक व्याख्यान की रूपरेखा तैयार करता है (व्याख्यान के उद्देश्यों का निर्धारण करना।)
2. मध्य पद:- व्याख्यान का प्रस्तुतीकरण (क्रियान्विति करना)
3. उत्तर पद:- ज्ञान का अर्जन/संग्रहण करना (छात्र)

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 30
DATE: 01/02/2020

व्याख्यान विधि के गुण :-

→ यह विधि समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण कराने में सहायक है।
→ समय, श्रम और धन की दृष्टि से खर्चीली एवं लम्बी विधि नहीं है।
→ यह विधि एक साथ समान रूप से सामूहिक रूप में बिना पक्षपात के छात्रों को पढ़ने का अवसर देती है।
→ यह विधि बालकों में स्मरण शक्ति का विकास करती है।
→ यह विधि सैद्धान्तिक विषयों के लिए जिनमें प्रायोगिक का अभाव होता है के लिए अधिक उपयोगी है (इतिहास, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, रा० विज्ञान)

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

व्याख्यान विधि के दोष :—

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि नहीं है।
→ क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर निर्भर नहीं है।
→ प्राप्त ज्ञान अस्थाई प्रकृति का होता है। क्योंकि श्रुति ज्ञान पर निर्भर है।
→ यह विधि बालकों में तर्कशक्ति, चिंतनशक्ति, कल्पनाशक्ति, सृजनात्मकता, रचनात्मकता के कौशलों का अवसर नहीं देती है।
→ प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी नहीं है।
→ यह विधि अनुशासनहीनता उत्पन्न करने का अवसर देती है।
→ बालकों में नीरसता लाती है। रोचक वातावरण उत्पन्न करने का अवसर नहीं देती है।
→ यह प्रतिभाशाली बालकों के लिए अधिक उपयोगी है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 31
DATE: 03/09/2020

3. व्याख्यान - प्रदर्शन शिक्षण विधि (Lecture - cum - Demonstration)

यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बधित पाठ्यवस्तु / समस्या को कक्षा- कक्ष में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है और स्वयं ही सबसे पहले व्याख्यान देता है, वर्णन, विश्लेषण, व्याख्या करता है उसके बाद छात्रों में रोचकता लाने के लिए, स्थायी रूप में सीखने के लिए प्रकरण से सम्बधित दृश्य उपकरणों को, वस्तुओं को, साधनों को, उदाहरणों को, सामग्री को प्रदर्शित करता है। जिसके माध्यम से समझाता है और उसके बाद पुनः व्याख्यान देता है और समस्या का समाधान करता है।

* इस विधि में शिक्षक कक्षा- कक्ष में दृश्य सामग्री के माध्यम से शारीरिक, मानसिक रूप से कक्षा- कक्ष में रोचकता लाता है सीखने में अवधान / ध्यान केन्द्रण उत्पन करता है जिससे स्थायी ज्ञान की प्राप्ति होती है।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

व्याख्यान प्रदर्शन विधि के गुण -

→ यह विधि मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से सीखने का अवसर देती है।
→ यह विधि कक्षा- कक्ष में छात्रों में सीखने में रोचकता लाती है।
→ यह विधि दृश्य सहायक सामग्री से सीखने का अवसर देती है जिससे स्थायी ज्ञान प्राप्त होता है।
→ यह विधि प्रमुखतः प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए अधिक उपयोगी है।
→ यह विधि भूगोल, कला, गृहविज्ञान, प्रायोगिक विषयों आदि के लिए अधिक उपयोगी है।
→ यह विधि कक्षा- कक्ष के नीरस वातावरण से मुक्ति दिलाती है।
→ मन्दबुद्धि, पिछड़े कमजोर बालकों के लिए उपयोगी।

Scanned with CamScanner

आविष्कार : पहले से बिना विद्यमान वस्तु का निर्माण
खोज :- पहले से विद्यमान वस्तु को ढूँढना / विलुप्त वस्तु
अनुसंधान :- खोजी गयी वस्तु से और अधिक जानकारी प्राप्त करना।

PAGE NO.: 32
DATE: 03/09/2020

व्याख्यान प्रदर्शन विधि के दोष :-

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से बालकों के लिए पूर्णत उपयोगी नही है। क्योंकि शिक्षक की भूमिका सक्रियता में होती है।
→ यह विधि छात्रों को स्वयं क्रिया करके सीखने का अवसर नहीं देती है।
→ यह विधि कक्षा-कक्ष में बालकों में रोचकता के वातावरण को उत्पन्न करने तक ही सीमित है।
→ यह विधि उच्चस्तरीय कक्षा के बालकों के लिए पूर्णत: उपयोगी नही है।
→ यह विधि पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट करने में सहायक नहीं है।
→ यह विधि सैद्धान्तिक विषयों के लिए जिनमें उदाहरणों का अभाव है, प्रयोग-प्रदर्शन का अभाव है के लिए उपयोगी नही है।

4. ह्यूरिस्टिक शिक्षण विधि (Hueristic Teaching method)

उपनाम :
→ अनुसंधान विधि
→ खोज विधि

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

प्रवर्तक - प्रो० हेनरी एडवर्ड आर्मस्ट्रॉंग
(यह लंदन के प्रोफेसर, रसायनशास्त्री एवं चिकित्सक थे)

यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बधित पाठ्यवस्तु / समस्या को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है जिसका समाधान छात्रों को सामूहिक रूप: में स्वयं क्रिया करके, मौलिक अनुसंधान करके समस्या समाधान करने के लिए कहता है शिक्षक की भूमिका केवल मार्गदर्शक के रूप में होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ह्यूरिस्टिक का शाब्दिक अर्थ :- अंग्रेजी भाषा का शब्द Heuristic की उत्पति ग्रीक/यूनानी भाषा के शब्द "Heuriscо" (ह्यूरिस्को) से हुई है जिसका अर्थ होता है अंग्रेजी अनुवाद के रूप में I Discover जिसके हिन्दी में चार अर्थ है - (i) मैं खोजता हूँ
(ii) मैं जानता हूँ
(iii) मैं पता लगाता हूँ
(iv) मैं मालूम करता हूँ
जिसके अन्त में सभी विद्यार्थी सामूहिक रूप में समस्या समाधान करने के बाद शिक्षक से कहते हैं कि I Discovered अर्थात मैंने खोज लिया है अथवा समस्या का समाधान कर लिया है अथवा मैंने याद कर लिया है।

अनुसंधान / खोज

	क्रियात्मक अनुसंधान	मौलिक अनुसंधान
1.	→ इसका सम्बद्ध विद्यालय से है।	→ यह विद्यार्थी केन्द्रित होता है।
	→ शिक्षक स्वयं क्रिया करके नवीन विधि/प्रविधि को उपयोगी बनाता है।	→ समस्या, विद्यालय एवं विद्यालय के बाहर हो सकती है।
	→ स्वयं समस्या का समाधान करता है।	→ इसमें विद्यार्थी स्वयं क्रिया करके समस्या का समाधान करता है।
	→ शिक्षण के माध्यम से इसकी अवधि 7-15 दिवस होती है।	
	→ प्रवर्तक - स्टीफन एम० कोरे (1953)	

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

ह्यूरिस्टिक विधि के गुण :-

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि है।
→ छात्रों को क्रिया करके सीखने का अवसर देती है।
→ यह विधि बालकों में मौलिक अनुसंधान एवं अमूर्त तार्किक चिंतन के गुणों का विकास करती है।
→ इस विधि से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
→ यह विधि सामूहिक रूप में समस्या का समाधान छात्रों को करने का अवसर देती है।
→ यह विधि बालकों में अनुशासनात्मक एवं सहयोगात्मक प्रवृत्ति का विकास करती है।
→ उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है।
→ प्रतिभाशाली बालकों के लिए उपयोगी है।
→ सामाजिक अध्ययन में सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक समस्याओं के समाधान के लिए उपयोगी है।

ह्यूरिस्टिक विधि के दोष :-

→ समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक नहीं है।
→ समय, श्रम, धन की दृष्टि से खर्चीली एवं लम्बी विधि है।
→ इस विधि में छात्र शिक्षक पर निर्भर करता है स्वतंत्र नहीं है।
→ प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी नहीं है।
→ मन्दबुद्धि, पिछड़े, कमजोर बालकों के लिए उपयोगी नहीं है।
→ जिन विषयों में नियम / सूत्र / सिद्धान्त पहले से ही विद्यमान हैं उनके लिए उपयोगी नहीं है।
→ पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट करने में सहायक नहीं है।
→ यह विधि बालकों में स्मरण शक्ति के विकास का अवसर नहीं देती है।
→ विद्यालयों में अनुसंधान उपकरणों का अभाव होता है।

Notes By R.K. Jangid 8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रायोजना विधि

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

योजना विधि (Plan Method)	(Project Method)
प्रवर्तक – जॉन डी.वी.	W. H. किलपैट्रिक
• शिक्षक केन्द्रित	• छात्र केन्द्रित
• पाठ्यपुस्तक केन्द्रित	• स्वयं क्रिया करके सीखने पर बल
• ज्ञानात्मक पक्ष का विकास	• सर्वांगीण विकास लाती है।
• स्मरण करने पर बल	

प्रायोजना विधि Planing Method

→ प्रायोजना विधि प्रयोजनवादियों के विचारधारा की देन है।
→ यह विधि जॉन डी. वी. के व्यवहारवाद की देन है।
→ यह वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विधि है जो मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास पर बल देती है।

प्रायोजना विधि का सूत्रपात जान डी. वी. की अमूर्त विचारधारा से प्रभावित होकर उनके प्रिय शिष्य W. H. किलपैट्रिक ने किया था जिसे इसका जनक कहते है।

प्रायोजना विधि के प्रमुख तथ्य :-
→ प्रोजेक्ट शब्द का सर्वप्रथम निर्माण 1900ई. में प्रो. रिचर्डसन ने किया था (कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रो.)

→ 1908 में प्रोजेक्ट का उल्लेख शिक्षा के क्षेत्र में किया जाने लगा।

→ 1918 में प्रो. किलपैट्रिक ने "द प्रोजेक्ट ऑफ रिचर्स मैथड" नामक शोधपत्र में उल्लेख किया था, जिसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान जे. ए. स्टीवेन्सन ने किया था।

Scanned with CamScanner

→ प्रोजेक्ट विज्ञान से लिया गया हैं जिसका सर्वाधिक प्रयोग आधुनिक समय में विज्ञान की शाखा अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) में किया जाता हैं।

नोट:- सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत प्रोजेक्ट का सर्वाधिक उपयोग इतिहास, भूगोल, भाषा, भ्रमण विषय, हस्तकार्य, कला, गृह विज्ञान, गणित में किया जाता हैं।

प्रायोजना विधि के पद, / चरण / सोपान

1. परिस्थिति का निर्माण करना।
2. प्रायोजना के उद्देश्यों का निर्धारण करना।
3. प्रायोजना का योजना व नियोजन करना।
4. प्रायोजना की क्रियान्विति करना।
5. निष्कर्ष एवं मूल्यांकन / निर्णय करना।
6. लेखाजोखा / विवरण तैयार करना।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

प्रायोजना विधि के गुण:-

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि हैं।
→ करो और सीखो के सिद्धान्त पर आधारित हैं। (क्रियाशिलता)
→ वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विधि हैं।
→ मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास पर भी बल देती हैं।
→ संरचनात्मक, रचनात्मक गुणों का विकास करती हैं।
→ प्राप्त ज्ञान स्थायी होता हैं।
→ उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी हैं।
→ प्रतिभाशाली बालकों के लिए उपयोगी हैं।
→ सामाजिक अध्ययन में भूगोल, कला, भाषा एवं प्रायोगिक विषयों के लिए उपयोगी हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रायोजना विधि के दोष :-

→ पाठ्यक्रम पूर्ण करने (समय पर) में सहायक नहीं है।
→ समय, श्रम, धन की दृष्टि से खर्चीली एवं लंबी विधि है।
→ बालकों में स्मरण शक्ति के विकास में सहायक नहीं है।
→ छोटी कक्षा एवं प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी नहीं है।
→ मंदबुद्धि, कमजोर एवं पिछड़े बालकों के लिए उपयोगी नही है।
→ यह विधि सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट करने में सहायक नहीं है।
Imp → इस विधि पर आधारित विद्यालयों में प्रोजेक्ट उपकरणों का अभाव होता है।

=

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

= ① आगमन → ③ संश्लेषण
② निगमन → ④ विश्लेषण
गुण-दोष: आगमन ↔ विश्लेषण, निगमन ↔ संश्लेषण

संश्लेषण	विश्लेषण
1. ज्ञात से अज्ञात	→ अज्ञात से ज्ञात
2. उदाहरण से नियम	→ उदाहरण से नियम
3. विशेष से सामान्य	→ सामान्य से विशेष
4. प्रत्यक्ष से प्रमाण	→ प्रमाण से प्रत्यक्ष
5. पूर्ण से अंश	→ अंश से पूर्ण

* आगमन विधि के शिक्षण सूत्र संश्लेषण विधि के समान होते हैं परन्तु गुण दोष विश्लेषण विधि के समान होते हैं।

* निगमन विधि के शिक्षण सूत्र विश्लेषण विधि के समान

Scanned with CamScanner

होते हैं परन्तु गुण दोष संश्लेषण विधि के समान होते है।

* यदि परीक्षा के प्रश्नपत्र में ज्ञात से अज्ञात शिक्षण सूत्र पूछा जाये तो उत्तर के प्रथम विकल्प की वरीयता में विकल्प में आगमन है तो आगमन उत्तर होगा इसके न होने पर विकल्प में संश्लेषण है तो वही उत्तर होगा।

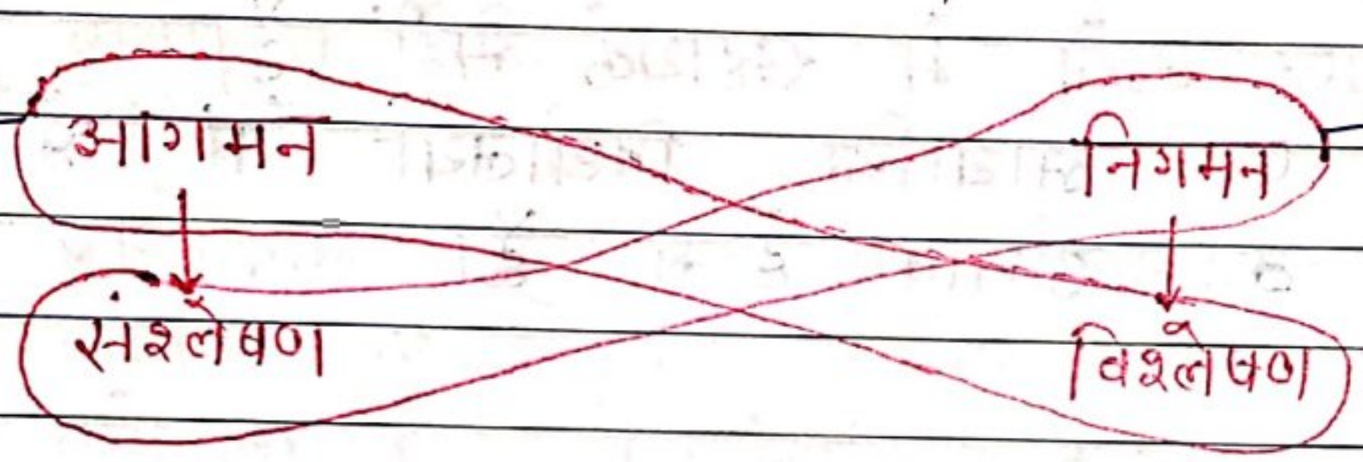

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

आगमन शिक्षण विधि (Inductive teaching method)

* आ + गमन = की ओर आना / जाना
  (सरलता से जटिलता की ओर)
* सूत्रधार - अरस्तू
* सूत्र :- उदाहरण → नियम → प्रतिपुष्टि

* यह शिक्षण की प्राचीन सरल स्पष्ट विधि है और सर्वाधिक प्रयोग में ली जाती है। यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक पाठ्यवस्तु से संबंधित समस्या को कक्षा- कक्ष में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है जिसके समाधान हेतु सर्वप्रथम उदाहरण, उपकरण, वस्तुऐं, साधन प्रस्तुत करता है। स्वयं व्याख्या, वर्णन, विश्लेषण करता है और छात्रों को निरीक्षण करने के लिए कहता है उसके पश्चात् विद्यार्थी स्वयं क्रिया करके उदाहरणों के माध्यम से समस्या

Scanned with CamScanner

का समाधान करते है, नियमों को विकसित करते है जिसके अन्त में सत्यापन अथवा प्रतिपुष्टि करते है।

आगमन विधि के पद/चरण/सोपान

1. उदाहरणों को प्रस्तुत करना/परिभाषित करना। (शिक्षक)
2. उदाहरणों का निरीक्षण करना (छात्र)
3. नियमों को प्रतिपादित करना (छात्र)
4. प्रतिपुष्टि अथवा सत्यापन करना (छात्र)

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

आगमन विधि के गुण :-

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि है।
→ क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर निर्भर है।
→ प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
→ यह विधि बालकों में मूर्त से अमूर्त तार्किक चिंतन के विकास पर बल देती है।
→ यह विधि बालकों में मौलिक अनुसंधान एवं समस्या का समाधान करने के गुणों का अवसर देती है।
→ यह विधि उदाहरणों से सीखने के कारण प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है। (वैसे सभी बालकों के लिए उपयोगी)
→ यह विधि गणित, विज्ञान, भाषायी व्याकरण सामाजिक अध्ययन के प्रायोगिक विषय के लिए उपयोगी है जिनमें उदाहरण विद्यमान है।
→ यह विधि सभी स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है।

आगमन विधि के दोष :-

→ यह विधि समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक नही है।
→ यह विधि बालकों में स्मरण शक्ति का विकास नही करती।
→ यह विधि सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक पाठ्यक्रम को स्पष्ट करने में सहायक नही है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

→ यह विधि समय और श्रम की दृष्टि से खर्चीली और लम्बी विधि है।

→ यह विधि उच्च स्तरीय कक्षा के बालकों के लिए अधिक उपयोगी नही है।

→ यह विधि प्रतिभाशाली बालकों के लिए अधिक उपयोगी नही है।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

निगमन शिक्षण विधि
(Reductive Teaching method)

* सूत्रधार - प्लेटो

* यह विधि आगमन विधि के विपरित विशेषताएँ रखती है, यह शिक्षक केन्द्रित विधि है। छात्र की भूमिका सूत्रो, नियमों को रटने मात्र है।

सूत्र :- नियम → उदाहरण → प्रतिपुष्टि

* यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बधित पाठ्यवस्तु को / समस्या को कक्षा-कक्ष में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है जिसके समाधान हेतु स्वयं सर्वप्रथम नियम/सूत्र/सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जिन्हे छात्रों को स्मरण करने के लिए कहता है।

* इसके बाद स्वयं उदाहरण देता है निष्कर्ष निकालता है और अन्त में सत्यापन करता है और समस्या का समाधान हो जाता है।

पद / चरण / सोपान

(i) नियमों को प्रस्तुत करना / परिभाषित करना।
(ii) उदाहरणों को प्रस्तुत करना।
(iii) निष्कर्ष निकालना।
(iv) प्रतिपुष्टि अथवा सत्यापन करना।

Scanned with CamScanner

निगमन विधि के शिक्षण सूत्र

1. अज्ञात से ज्ञात की ओर
2. नियम से उदाहरण की ओर
3. सामान्य से विशेष की ओर
4. प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर

अन्य उसी प्रकार से -

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

निगमन विधि के गुण :-

→ यह विधि समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक है।
→ समय, श्रम, धन की दृष्टि से खर्चीली नही है।
→ बालको में स्मरण शक्ति का विकास करती है।
(क्योंकि रटने पर बल देती है।)
→ यह विधि सूत्रों को रटने के कारण प्राथमिक स्तर के लिए परन्तु प्रयोग की दृष्टि से उच्च स्तरीय कक्षा के बालकों के लिए उपयोगी है।
→ यह विधि सा० अध्ययन के उन विषयों के लिए उपयोगी है जिनमें नियम / सूत्र / सिद्धान्त पाये जाते हैं।
(जैसे भाषायी व्याकरण, प्रायोगिक विषय के लिए उपयोगी)

निगमन विधि के दोष :-

→ मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि नही है।
→ क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर निर्भर नही है।
→ बालकों में रटने की प्रवृत्ति का विकास करती है।
→ इस विधि से प्राप्त ज्ञान अस्थायी प्रकृति का होता है।
→ प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए अधिक उपयोगी नहीं है।
→ यह विधि बालकों में मौलिक अनुसंधान / अमूर्त तार्किक चिंतन, सृजनात्मकता, रचनात्मकता के कौशलों के विकास का अवसर नहीं देती है।
→ यह विधि पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट करने में सहायक नही है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 42
DATE: 08/02/2020

[संश्लेषण = विश्लेषण]

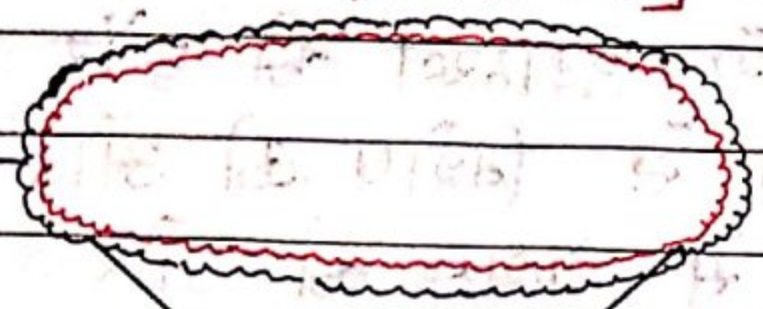

संश्लेषण विधि ←
(पूर्ण से अंश)
→ गैस्टाल्टवाद
→ पूर्णाकार/समग्राकृतिवाद
→ समेटना
→ बांधना
→ एकीकृत करना
→ समन्वित करना

→ विश्लेषण विधि (अंश से पूर्ण)
→ वर्गीकृत करना
→ विभाजित करना
→ बाटंना
→ खोलना
→ तोड़ना

उदाहरण↓
1. वृक्ष
2. पादपक्रम
3. शारीरिक संरचना
4. घास
5. लकड़ी का बंडल

उदाहरण :- 1. तना
2. पाठ
3. हड्डी
4. तिनका
5. लकड़ी

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

नोट — तिनके का घास में मिल जाना अंश से पूर्ण है (विश्लेषण)
तिनके का घास से अलग होना पूर्ण से अंश है (संश्लेषण)

संश्लेषण शिक्षण विधि

यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक/विधि है जिसमें शिक्षक सम्बधित पाठ्यवस्तु को एकीकृत समन्वित रूप में प्रस्तुत करता है जिसे पूर्णाकार कहते हैं। उसके बाद वर्णन, विश्लेषण, व्याख्या करता है और स्वयं समस्या का समाधान करता है।

यह विधि गेस्टाल्टवादियों की विचारधारा से प्रभावित है थे मनोवैज्ञानिक जर्मन विद्वान थे।

Scanned with CamScanner

→ गेस्टाल्ट जर्मन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है पूर्णाकार या समग्रकृतिवाद। जिसके मूल में सूझ निहित होती है जो अचानक आती है और समझ धीरे-धीरे विकसित होती है।

→ गेस्टाल्टवाद जर्मनी का एक सम्प्रदाय है (विचारधाराओं का एक संगठन है) जिसके प्रर्वतक मैक्स वर्दीमर है, प्रयोगकर्ता कोहलर (1925) है समर्थक कोफ्का, कुर्ट लेविन है।

→ इस विधि में विद्यार्थी पूर्णाकार/समग्र को देखकर निरीक्षण के माध्यम से सम्बधित पाठ्यवस्तु के प्रति समझ विकसित करते है।

→ नोट 1· संश्लेषण विधि के शिक्षण सूत्र आगमन विधि के समान होते है, परन्तु गुण-दोष निगमन विधि के समान होते है।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

विश्लेषण विधि
Analytical Teaching Method

→ यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है। विधि है जिसमें शिक्षक समग्र विषयवस्तु/पाठ्यवस्तु को एक साथ प्रस्तुत ना करके अपितु छोटे-छोटे खण्डों एवं अंशो में वर्गीकृत/विभाजित करके प्रस्तुत करता है। जिसके अन्त में पूर्णाकार बताता है अथवा समग्र रूप में प्रस्तुत करता है।

नोट → विश्लेषण विधि दार्शनिक सुकरात की प्रश्नोत्तर विधि से प्रभावित है जो परिचर्चा, संवाद, वाद-विवाद के माध्यम से सामूहिक रूप में समस्या का समाधान करने पर बल देती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

→ इस विधि में शिक्षक छात्रों के समक्ष समस्या रख देता है छात्र सक्रिय होकर शिक्षक के सहयोग से परिचर्चा करते हुए समस्या का निष्कर्ष निकालते है और समाधान करते है।

→ इस विधि में शिक्षक और छात्र दोनो मिलकर प्रश्नोत्तर के माध्यम से परिचर्चा करते हुए समस्या का समाधान करते हैं।

नोट:- विश्लेषण विधि के शिक्षण सूत्र निगमन विधि के समान होते है परन्तु गुण-दोष आगमन विधि के समान होते है।

नोट:- संश्लेषण एवं विश्लेषण विधि दोनों आपने आप में पूर्ण विधि नहीं है अपितु एक-दूसरे की पूरक है। अतः शिक्षक को पहले संश्लेषण विधि से पढाना चाहिए उसके बाद विश्लेषण विधि से समझाना चाहिए जिससे स्थायी ज्ञान की प्राप्ति होती है।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

समस्या समाधान शिक्षण विधि
Problem Solving Method

PAGE NO.: 45
DATE: 09/02/2020

→ यह विधि प्रयोजनवादियों की विचारधारा की देन है अर्थात् प्रोजेक्ट विधि से प्रभावित है।
→ यह ह्यूरिस्टिक/ अनुसंधान विधि से प्रभावित है।

→ यह वैज्ञानिक विधि के समकक्ष है।

→ यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बधित पाठ्यवस्तु/समस्या को कक्षा-कक्ष में छात्रों के समक्ष रखता है और उसका समाधान स्वयं छात्रों को क्रिया करके, मौलिक अनुसंधान करके तथ्यों के आधार पर अमूर्त तार्किक चिंतन करके, मानसिक क्रियाओं को सक्रिय बनाते हुए समाधान करते हैं।

→ यह विधि शिक्षणशास्त्री जॉन डीवी की अमूर्त विचारधारा से प्रभावित है।

→ समस्या समाधान विधि के पद/चरण/सोपान

1. समस्या का चयन करना।
2. समस्या का प्रस्तुतीकरण करना।
3. परिकल्पना/उपकल्पना बनाना। (Hypothesis)
4. तथ्यों/आंकड़ों का संकलन करना।
5. वर्गीकरण एवं विश्लेषण करना।
6. निष्कर्ष एवं मूल्यांकन करना।
7. सामान्यीकरण/सिद्धान्त बनाना।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

समस्या समाधान विधि के गुण :-

1. मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि है।
2. बालकों में शोध प्रवृत्ति/अनुसंधान प्रवृत्ति के गुणों का विकास करती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3. यह विधि बालकों में क्रिया करके सीखने का अवसर देती है।
4. इस विधि से प्राप्त ज्ञान स्थाई प्रकृति का होता है।
5. यह विधि बालकों में मौलिक अनुसंधानों के गुणों का विकास करती है।
6. यह विधि तर्कशक्ति, चिन्तनशक्ति, कल्पनाशक्ति, खोजी प्रवृत्ति, सृजनात्मकता, रचनात्मकता के कौशलों के विकास का अवसर देती है।
7. यह विधि उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए एवं उच्चस्तरीय कक्षा के बालकों के लिए उपयोगी है।
8. प्रतिभाशाली बालकों के लिए उपयोगी है।
9. यह विधि सामाजिक अध्ययन के सामाजिक मुद्दों / समस्या, प्राकृतिक समस्या, आर्थिक समस्या के समाधान में उपयोगी है।

Notes by R.K. Jangid 8209022797

समस्या समाधान विधि के दोष

1. यह विधि समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक नही है।
2. समय, श्रम, धन की दृष्टि से खर्चीली एवं लम्बी विधि है।
3. बालकों में स्मरण शक्ति का विकास नहीं करती है।
4. पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट करने में सहायक नही है।
5. प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी नही है।
6. मन्दबुद्धि, पिछड़े बालकों के लिए उपयोगी नही है।
7. इस विधि पर आधारित विद्यालयों में शोध उपकरणों का अभाव होता है।
8. इस विधि पर आधारित विद्यालयों में अनुभवी, प्रशिक्षित शिक्षकों का, शोध निर्देशकों का अभाव होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

क्षेत्रीय पर्यटन / भ्रमण / ऐतिहासिक भ्रमण शिक्षण विधि (Field Trip T. Method)

PAGE NO.: 47
DATE: 09/02/2020

प्रवर्तक - दार्शनिक रूसो
प्रयोगकर्ता - जॉन डी. वी

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

→ यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक सम्बधित पाठ्यवस्तु को कक्षा- कक्ष में प्रस्तुत करता है, व्याख्या- वर्णन, विश्लेषण करता है। अमूर्त ज्ञान की प्राप्ति कराता है जिसे स्थायी बनाने के लिए छात्रों को घटना स्थल पर लेजाकर भ्रमण के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में, ज्ञानेन्द्रियों से (दृश्य से) ज्ञान की प्राप्ति कराता है।

→ इस विधि में विद्यार्थी स्वयं सक्रिय होकर भ्रमण के माध्यम से विद्यालय के बाहर के वातावरण से प्रकृति से ऐतिहासिक स्थलों से, स्मारकों से, घटनाओं से, पाठ्यवस्तु से सम्बधित करके स्थायी ज्ञान की प्राप्ति करता है।

Imp

क्षेत्रीय पर्यटन विधि मनोवैज्ञानिक एडगर डेल के अनुभव शंकु प्रतिमान से प्रभावित है।

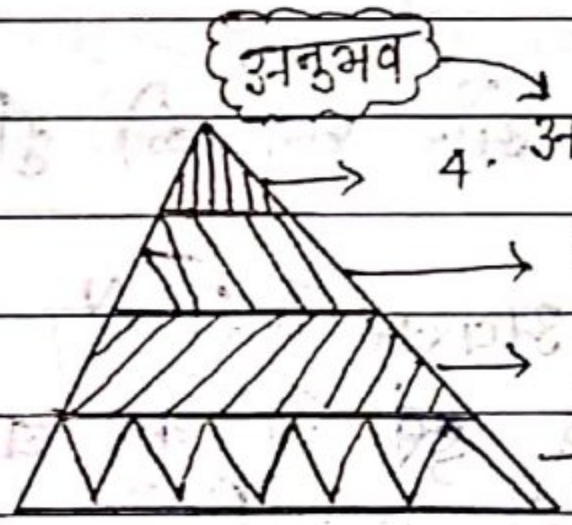

(अनुभव शंकु प्रतिमान)

क्षेत्रीय पर्यटन विधि के पद / चरण / सोपान

1. भ्रमण के उद्देश्यों का निर्धारण करना।
2. भ्रमण की रूपरेखा तैयार करना।
3. भ्रमण का नियोजन करना।
4. भ्रमण की क्रियान्विति करना।
5. भ्रमण का प्रतिवेदन तैयार करना।
6. निष्कर्ष एवं मूल्यांकन निकालना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भ्रमण विधि के गुण:-

→ मनोवैज्ञानिक वैज्ञानिक विधि है।
→ छात्रों को ज्ञानेन्द्रियों से सीखने का अवसर देती है (दृश्य) जिससे प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
→ इस विधि में बालक स्वयं सक्रिय होता है निरीक्षण करके घटनाओं को सीखता है।
→ कक्षा - कक्ष के नीरस वातावरण से छात्रों को मुक्ति दिलाती है।
→ प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति कराती है।
→ प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए तथा उच्चस्तरीय बालको के लिए भी उपयोगी है।
→ यह विधि सभी स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है।
→ यह विधि सामाजिक अध्ययन में इतिहास, भूगोल समाजशास्त्र जैसे विषयों के लिए अधिक उपयोगी है।

Notes By R.K. Jangid 8209022797

भ्रमण विधि के दोष:-

→ यह विधि समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक नहीं है।
→ यह विधि समय, श्रम और धन की दृष्टि से खर्चीली एवं लम्बी विधि है।
Imp → अनुशासनहीनता का अवसर देती है।
→ यह विधि गरीब, पिछड़े होशियार बालकों को धन के अभाव में एवं लॉटरी प्रणाली के कारण भ्रमण पर जाने से वंचित कर देती है।
→ भ्रमण को विद्यालय की समय सारणी में स्थान नहीं होने से शिक्षण - अधिगम बाधित होता है।
→ यह विधि अत्यधिक छोटी कक्षा के बालकों के लिए उपयोगी नहीं है क्योंकि ये बालक भ्रमण को पिकनिक / मनोरंजन का स्थल मानते हैं।
→ यह विधि भाषा, व्याकरण, प्रायोगिक विषयों, भाषायी विषयों के लिए उपयोगी नहीं है।

Scanned with CamScanner

पात्राभिनय / नाटक / भूमिका निर्वहन
शिक्षण विधि (Role Playing, Drama)

PAGE NO.: 49
DATE: 09/02/2020

→ यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें शिक्षक कक्षा-कक्ष में सम्बंधित पाठ्यवस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है और उसकी व्याख्या, वर्णन, विश्लेषण करता है जिसे विद्यार्थी पात्रों की भूमिका धारण करके नाटकों के माध्यम से क्रिया करके सम्बंधित विषय वस्तु को सरल स्पष्ट करते हैं और ज्ञान की अमिट छाप मस्तिष्क पर स्थायी होती है।

→ यह विधि बालकों में ज्ञानात्मक पक्ष का विकास करने के साथ-साथ भावात्मक, क्रियात्मक पक्षों को विकसित करने का अवसर देती है।

→ पात्राभिनय विधि के पद / चरण / सोपान

1. नाटक की विषयवस्तु का चयन करना।
2. पात्रों का चयन करना।
3. नाटक की योजना बनाना।
4. नाटक का प्रस्तुतीकरण / क्रियान्विति करना।
5. निष्कर्ष एवं मूल्यांकन निकालना।
6. समीक्षा / पृष्ठपोषण (Feedback) देना।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

नाटक विधि के गुण :-

1. मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि है।
2. क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर निर्भर है।
3. रचनात्मक, सृजनात्मक कौशलों का विकास करती है।
4. स्थायी ज्ञान की प्राप्ति कराने में सहायक है।
5. छात्रों में सम्प्रेषण, कौशल, अभिव्यक्ति कौशल, संवेग संवेदना, शब्द उच्चारण आदि गुणों का विकास करती है।
6. उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है।
7. नाटकों के माध्यम से बालकों में अमूर्त तार्किक चिंतन का विकास होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

8. यह विधि हिंदी साहित्य में एकाकी नाटक, भाषायी साहित्य में नाटक विषयों के लिए, ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट करने के लिए उपयोगी है।

नाटक विधि के दोष:-

1. यह विधि भी समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक नही है।
2. समय, श्रम एवं धन की दृष्टि से खर्चीली है।
3. यह विधि अनुशासन हीनता का अवसर देती है।
4. छोटे बच्चे अथवा प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी नही है।
5. यह विधि भाषा, व्याकरण, गणित, विज्ञान, प्रायोगिक विषय के लिए उपयोगी नही है।
6. मन्दबुद्धि, पिछड़े कमजोर बालकों के लिए उपयोगी नही है।
7. पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रकरण को स्पष्ट करने में सहायक नही है।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कहानी-शिक्षण-विधि
(Story Teaching Method)

→ इस विधि के सूत्रधार दार्शनिक प्लेटो (Republic) है।

→ यह शिक्षण की एक ऐसी तकनीक है जो प्राचीन परम्परागत विधि के रूप में मान्यता प्राप्त है। जिसमें शिक्षक सक्रिय होता है, छात्रों की भूमिका निष्क्रिय, मूकदर्शक श्रोता के रूप में होती है।

→ इस विधि में शिक्षक सम्बंधित पाठ्यवस्तु को अतीत की घटनाओं के माध्यम से कहानी के रूप में जोड़कर वर्तमान पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करता है।
इससे छात्रों में रोचकता आती है अवधान, ध्यान केन्द्रण विकसित होता है। प्रकरण से सहसम्बद्ध होता है। समस्या स्पष्ट हो जाती है।

→ कहानी पाठ्यवस्तु से सम्बंधित होनी चाहिए।
→ कहानी प्रकरण को स्पष्ट करने वाली हो।
→ कहानी बालकों के मानसिक स्तर के अनुसार हो।
→ कहानी लम्बी एवं उलझाने वाली न हो।
→ कहानी में संवेग, संवेदना एवं क्रमबद्धता हो।
→ कहानी का निश्चित शीर्षक हो जिसके अन्त में नैतिक शिक्षा हो।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Teaching aid
शिक्षण सहायक सामग्री
या
शिक्षण अधिगम सामग्री (T.L.M.)

PAGE NO.: 59
DATE

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

1. शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए, शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक शिक्षक कक्षा-कक्ष में शिक्षण में जिन वस्तुओं, उपकरणों, साधनों, सामग्री को उपयोगी बनाता है जिससे सम्बधित पाठ्यवस्तु छात्रों के लिए सरल/स्पष्ट/ रोचक, प्रभावी एवं स्थायी हो जाती है।

2. शिक्षकरूपी कलाकार के हाथ में शिक्षण सहायक सामग्री कक्षा-कक्ष में उपयोग में लिए जाने वाली वस्तुएँ/उपकरण /साधन है। जिनके माध्यम से कक्षा-कक्ष का वातावरण जीवंत प्रायः एवं सजीव हो उठता है और कक्षा-कक्ष में रोचकता आ जाती है।

3. एक अमेरिकी रिसर्च के अनुसार स्पष्ट हुआ है कि "सुनने से 10 प्रतिशत तक, देखने से 50% तक (11-50 प्रतिशत) देखने-सुनने (दृश्य-श्रव्य) से 91% से भी अधिक (51-100 प्रतिशत) तक ज्ञान की प्राप्ति होती है"

4. भारतीय शिक्षा आयोग/ कोठारी आयोग 1964-66 के अनुसार उल्लेखित है कि "शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए शिक्षण प्रक्रिया में प्रत्येक विद्यालयों को शिक्षण सहायक सामग्री को उपयोगी बनाना चाहिए इसका प्रयोग शैक्षिक क्षेत्र/ शिक्षा में क्रांतिकारी आंदोलन होगा।

5. डॉ. मार्या मोंटेसरी ने दृश्य-श्रव्य सामग्री को छात्रों के लिए ज्ञानेन्द्रियों से सीखने का प्रवेशद्वार कहा है।

6. प्रो० श्रीमती T.H. कोचर कहती है कि "जिस प्रकार एक सैनिक को युद्ध लड़ने से पहले हथियारों का ज्ञान होना आवश्यक है उसी प्रकार शिक्षक को शिक्षण के उद्देश्यों

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

की प्राप्ति कराने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का ज्ञान होना आवश्यक है।

शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

1. प्रक्षेपी शिक्षण सहायक सामग्री – Projected
2. अप्रक्षेपी शिक्षण सहायक सामग्री – Non-Projected
   - श्रव्य
   - दृश्य
     - (1) प्रदर्शनी (Display)
     - (2) द्विआयामी (Two Diamention)
     - (3) त्रि-आयामी (Three Diamention)
   - श्रव्य-दृश्य
3. क्रियात्मक सहायक सामग्री – Activities
4. कम्प्यूटर अनुदेशन सहायक सामग्री – Computer Instruction aid

Notes By
R.K. Jongid
8209022797

1 प्रक्षेपी सहायक सामग्री (Projected Teaching Method)

Scanned with CamScanner

→ प्रक्षेपी का अर्थ होता है प्रदर्शित करना, उद्दीपित करना बाहर निकालना, बोर्ड पर दिखाना। अतः प्रक्षेपी स्वयं में शिक्षण की सहायक सामग्री न होकर अपितु विषयवस्तु को बोर्ड पर प्रदर्शित करने हेतु उपयोग में ली जाती है जो एक मशीन, यंत्र, उपकरण होता है।

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

प्रक्षेपी के उदाहरण :-
(i) स्लाइड्स
(ii) फिल्म पट्टिका
(iii) डायस्कोप (जादू लालटेन)
(iv) एपिडायस्कोप (चित्र विस्तारक यंत्र)
(v) O.H.P. (over Head projector) सिरोपरीयंत्र
(vi) प्रोजेक्टर (projector)

2. अप्रक्षेपी सहायक सामग्री

यह शिक्षण की वह सामग्री है जो स्वयं में ही शिक्षण की सामग्री होती है। एक मशीन, यंत्र, उपकरण नहीं होता अपितु स्वयं में ही शिक्षण का एक साधन होता है।

→ यह सामग्री तीन प्रकार की होती है -
(i) श्रव्य, (ii) दृश्य, (iii) दृश्य-श्रव्य

1 श्रव्य सहायक सामग्री :-

यह शिक्षण की वह सामग्री है जिसमें श्रवणेन्द्रियों अथवा कानों का प्रयोग होता है जिससे प्राप्त ज्ञान 10% तक होता है।

जैसे - रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टेलिफोन, ग्रामोफोन, लिंग्वाफोन, हेडफोन, डिक्टाफोन

Scanned with CamScanner

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

→ ध्वनि के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

• ग्रामोफोन (संगीत का ज्ञान)

यह शिक्षण की श्रव्य सामग्री है जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में अभावग्रस्त, दुर्लभ, पिछड़े हुए स्थानों पर निवास करने वाले अशिक्षित लोगों को ध्वनि के माध्यम से संगीत का ज्ञान कराया जाता है। इसके अतिरिक्त गाने, कविता, निबंध, नाटक की ध्वनि सुनाई जाती है।

• लिंग्वाफोन :- (भाषाई ज्ञान) Language

↓

Linguastic Knowledge.

→ यह भी ग्रामोफोन के समान श्रव्य सामग्री है जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के दूर दराज स्थानों पर निवास करने वाले निरक्षर लोगों को ~~भाव~~ ध्वनि के माध्यम से भाषायी ज्ञान कराया जाता है। इसके अतिरिक्त वर्ण, शब्द, उच्चारण शब्दावली, वाक्य, अभिवादन, अंकगणित ज्ञान आदि कराया जाता है।

2. दृश्य शिक्षण सहायक सामग्री :-

यह शिक्षण की वह सामग्री है जिसका सम्बंध दृश्य इन्द्रियों (आँख अथवा नेत्रों) से होता है जिससे प्राप्त ज्ञान 11-50 प्रतिशत तक होता है।

यह सामग्री तीन प्रकार की होती है -

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

दृश्य (visual)

(i) प्रदर्शनी (Display)
- सूचना पट्ट
- श्यामपट्ट (चोक बोर्ड)
- फ्लेनिल बोर्ड (खादीबोर्ड)
- बुलेटिन बोर्ड (न्यूज बोर्ड)
- चुम्बकीय बोर्ड
- सैक्सटेन्ट (सीमसटेन्ट)

(ii) द्वि-आयामी (Pollar Diamantion)
- रेखा चित्र
- मानचित्र
- ग्राफ (आलेख)
- कार्टून्स
- मॉडल्स
- श्यॉ मैट्रिक बॉक्स
- पुस्तक
- झाड़न (डस्टर)
- ग्लोब

(iii) त्रि आयामी (Three Diamention)
- कठपुतली
- नमूने / प्रतिचयन / निदर्शन

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

नोट • सूचना पट्ट के अन्तर्गत वर्तमान की (दिन-प्रतिदिन की) एवं भविष्य की (आने वाले कल) क सूचनाएँ सम्प्रेषित की जाती है भूतकाल की सूचनाओं का उल्लेख नहीं होता है।

नोट:- श्यामपट्ट अथवा पट्ट के चार रंग होते थे
- (i) काला (Black)
- (ii) हरा (Green)
- (iii) पीला (Yellow)
- (iv) नीला (Sky Blue)

→ सरकारी विद्यालयों में वर्तमान में सफेद एवं लाल रंग के बोर्ड को मान्यता प्राप्त नही है।

नोट:- फ्लेनल बोर्ड

Scanned with CamScanner

3. दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री : (visual - Audio Teaching material)

यह शिक्षण की वह सामग्री है जिसमें दृश्य-श्रवण इन्द्रियों का प्रयोग होता है। आँख-कानों का प्रयोग होता है जिससे प्राप्त ज्ञान 51-100 प्रतिशत तक होता है।

→ यह सामग्री छात्रों में स्थायी ज्ञान की प्राप्ति कराती है कक्षा-कक्ष में रोचकता लाती है इसलिए तो डॉ मार्या मोंटेसरी ने दृश्य-श्रव्य सामग्री को ज्ञानेन्द्रियों से सीखने का प्रवेश द्वार कहा है।

→ उदाहरण (i) टेलीविज़न / दूरदर्शन
(ii) फिल्म / सिनेमा
(iii) कम्प्यूटर / संगणक
(iv) कक्षा-कक्ष में शिक्षक
(v) लेपटॉप
(vi) टैबलेट
(vii) स्मार्टफोन
(viii) भारत की प्रथम बोलती फिल्म आलमआरा (दृश्य-श्रव्य)

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

नोट: → भारत की प्रथम मूक फिल्म - हरिशचन्द्र (दृश्य)

क्रियात्मक शिक्षण सहायक सामग्री:-

यह शिक्षण की वह सामग्री होती है जिसका उपयोग स्वयं विद्यार्थी अधिगम हेतु करता है।

Imp → यह सामग्री विद्यालय के बाहर वातावरण में उपलब्ध होती है जिसमें विद्यार्थी स्वयं सहभागी सदस्य बनता है, प्रत्यक्ष रूप में देखता है और सीखता है।

जैसे / उदाहरण :- (i) मेले
(ii) प्रदर्शनी
(iii) संग्रहालय
(iv) क्षेत्रीय भ्रमण स्थल
(v) विज्ञान / प्रदर्शन
(vi) विज्ञान प्रयोगशाला
(vii) रैलियाँ
(viii) नाटक
(ix) सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम

Scanned with CamScanner

कम्प्यूटर अनुदेशन शिक्षण सहायक सामग्री

यह शिक्षण की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कम्प्यूटरयुक्त, तकनीकीयुक्त इंटरनेटयुक्त सहायक सामग्री है जिसके माध्यम से विद्यार्थी स्वयं भी शिक्षक के बिना अधिगम की प्राप्ति करता है, स्वाध्याय का विकास करता है।

उदाहरण :- (1) WWW (world wide web)
(2) google
(3) Internet
(4) E-Mail
(5) चेटनेट
(6) यूजनेट
(7) टेलनेट
(8) फुशनेट
(9) E-Book (अणु पुस्तक)
(10) E-Library (अणु पुस्तकालय)
(11) E-School (अणु स्कूल/विद्यालय)

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मापन एवं मूल्यांकन

PAGE NO.: 59
DATE: 16 / 02 / 2020

मूल्यांकन

मूल्य (values)
गुण / श्रेष्ठ / अच्छा
गुणात्मक
भाव + क्रिया
सहशैक्षिक
चरित्र प्रमाण
विद्यालय

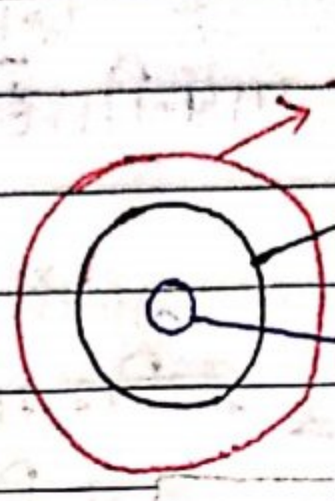

अंकन
मापन (संख्यात्मक
संख्यात्मक - अंक / प्रतिशत / ग्रेड
मात्रात्मक
पाठ्यपुस्तक
शैक्षिक
ज्ञानात्मक
स्मरण शक्ति
अंकतालिका

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

नोट:- कक्षा - कक्ष का परिणाम सदैव मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनो होना चाहिए अच्छा होता है।

मापन :-

→ जब किसी वस्तु के केवल परिणाम का बोध होता है मापन कहलाता है।

→ मापन मात्रात्मक होता है संख्यात्मक होता है जिसके माध्यम से बालको को प्राप्त उपलब्धि के लिए अंक / प्रतिशत / ग्रेड प्रदान किए जाते है।

→ मापन मूल्यांकन का ही एक अभिन्न अंग है जिसका क्षेत्र सीमित होता है। जिस

→ मापन का सम्बध ज्ञानात्मक पक्ष से है, पाठ्यपुस्तक से है।

→ मापन का सम्बध शैक्षिक से है।

→ मापन निदानात्मक एवं उपचारात्मक होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

→ मापन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक के ज्ञानात्मक पक्ष में अपेक्षित परिवर्तन लाया जाता है।

→ मापन के अन्दर एक मापनी होती है जो 4 प्रकार की होती है -

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

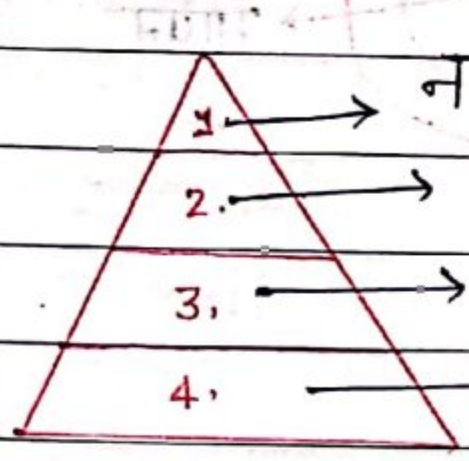

(A) नामित मापनी :- वह मापनी होती है जो समग्र समूह में से निश्चित संख्या के समूह का बोध कराती है।
जैसे- कक्षा में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों में से 10 विद्यार्थी मेरिट में स्थान प्राप्त करेंगे।

(B) क्रम निर्धारण मापनी - वह मापनी होती है जो समग्र समूह में से आरोही एवं अवरोही क्रम में घटनाओं को प्रदर्शित करती है।
जैसे - 80 प्रतिशत, 78 प्रतिशत, 75 प्रतिशत

(C) वर्ग अन्तराल मापनी :- वह मापनी होती है जिसका प्रयोग सांख्यिकी में सर्वाधिक होता है जिसके माध्यम से समग्र समूह की संख्याओं को वर्ग अन्तराल से प्रदर्शित किया जाता है।
जैसे: डॉक्टर द्वारा थर्मामीटर का प्रयोग करना।

(D) अनुपात मापनी :- समग्र समूह की इकाईयों को निश्चित अनुपात के माध्यम से प्रदर्शित करना अनुपात मापनी है। जैसे कक्षा- कक्ष में छात्र-छात्राओं का अनुपात 60 : 40

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन - मूल्य + अंकन

→ मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरन्तर रूप से प्रयोग में ली जाने वाली वह प्रक्रिया है जिसमें बालकों की प्राप्त उपलब्धियों का अन्तिम निर्णय लिया जाता है।

→ मूल्यांकन सार्वभौमिक रूप से चलने वाली सतत अथवा निरन्तर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यालय में सम्पूर्ण शैक्षणिक सत्र में विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का (शैक्षिक एवं सहशैक्षिक) पता लगाया जाता है।

→ मूल्यांकन का सम्बंध मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों से होता है।

→ मूल्यांकन का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होता है।

→ मूल्यांकन के माध्यम से बालकों के अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन का पता लगाया जाता है।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

Imp → मूल्यांकन में मापन निहित होता है।

→ मूल्यांकन के अन्तर्गत बालकों को परिणामों की प्राप्ति होती है जिसके अन्त में उपलब्धियों के लिए अंकतालिका एवं चरित्र प्रमाण पत्र दिया जाता है।

नोट मूल्यांकन के बाद छात्रों की समस्या का समाधान नहीं होता है।

- शिक्षणशास्त्री क्रॉनबैक के शब्दों में "मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों ही मिलकर इस बात का निर्धारण करते हैं कि शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति कितनी हुई अथवा नहीं हुई है मूल्यांकन कहलाता है।

Scanned with CamScanner

PAGE NO.: 62
DATE: 16/02/2022

Imp.

NCERT 1961 ने मूल्यांकन के लिए 3 बातों का होना आवश्यक बताया।

(1) शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई?
(2) मूल्यांकन- प्रविधि उद्देश्य प्राप्ति में कहाँ तक सफल हुई?
(3) विद्यार्थियों ने अधिगम- अनुभव कितना प्राप्त किया?
का पता लगाना ही मूल्यांकन है।

प्रो० बी.एस. ब्लूम के शब्दों में "इन्होंने मूल्यांकन में 3 बातों को सम्मिलित किया है-
(1) शिक्षण उद्देश्य
(2) मूल्यांकन प्रविधि
(3) अधिगम अनुभव

Notes By
R.K. Jangid
8209022797

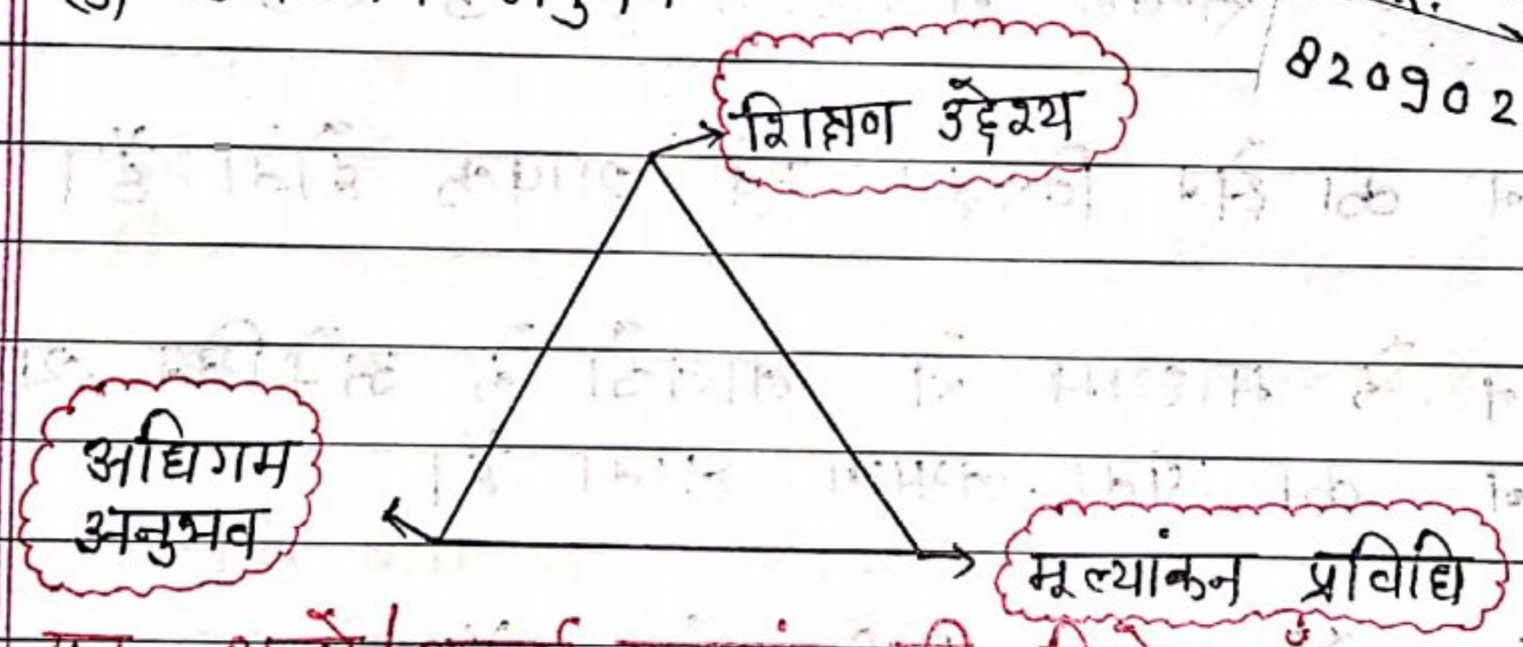

- एक अच्छे/आदर्श मूल्यांकन की विशेषताएँ:-

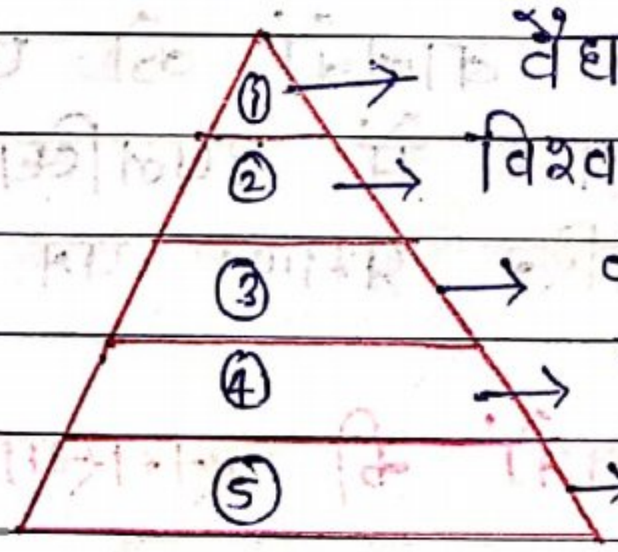

(A) वैधता :- उद्देश्यपूर्ण परीक्षण सदैव वैध होते हैं। जब मूल्यांकन कर्ता के द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न पढ़ाये गये प्रकरण से सम्बन्धित हो तो उनसे प्राप्त होने वाला परिणाम वैधता कहलायेगा।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(B) विश्वसनीयता (conformity) :-

जब मूल्यांकनकर्ता पर परीक्षण करते समय समय, स्थान, परिस्थिति का प्राप्त परिणामों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तो उसे विश्वसनीयता कहते हैं।

Imp नोट :- समान स्तरीय परीक्षा में बार-बार अंकन करने पर एक जैसा परिणाम प्राप्त होना विश्वसनीयता कहलाती है।

Notes By
R. K. Jongid
8209022797

परीक्षा = बार - बार] परिणाम एक जैसा
अंकन = बार - बार]

(C) वस्तुनिष्ठता :- (objectivity)

जब मूल्यांकनकर्ता पर परीक्षण करते समय प्राप्त परिणामों पर व्यक्ति विशेष की रुचि कोई प्रभाव नहीं डालती है वस्तुनिष्ठता कहलाती है।

→ वस्तुनिष्ठता को वैज्ञानिकता एवं तटस्थता भी कहते हैं।

नोट :→ परीक्षा - एक बार] - परिणाम एक जैसा
अंकन = बार - बार]

(D) स्पष्टता :- (Clearcity)

जब मूल्यांकनकर्ता के द्वारा पूछे जाने वाले समस्त प्रश्न सरल, स्पष्ट एवं बालकों के मानसिक स्तर के अनुसार है तो उनका परीक्षण करने पर प्राप्त परिणाम स्पष्टता कहलाता है।

(E) व्यापकता :- (comprehansive) / समग्रता

जब मूल्यांकनकर्ता के द्वारा पूछे जाने वाले समस्त प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से संबधित हो, सभी प्रकार के प्रश्न सम्मिलित हो तो उनका परीक्षण करने पर प्राप्त होने वाला परिणाम व्यापकता कहलाता है।

Scanned with CamScanner

नोट :- 1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न व्यापक प्रश्न कहलाते हैं।

2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में वैधता और विश्वसनीयता होती है।
वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का सर्वप्रथम निर्माण BAS में होरासमैन ने किया था।

3. विकास :- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का विकास राइसमैन ने किया था।

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

नोट :- निबंधात्मक प्रश्न परम्परागत प्रश्न कहलाते हैं जो विश्लेषणात्मक होते हैं। इन्हे विवेचनात्मक प्रश्न भी कहते हैं।

नोट :- वैकल्पिक प्रश्नों को प्रत्याभिज्ञान प्रश्न कहते हैं।

नोट :- रिक्त स्थानों की पूर्ति करो ? वाले प्रश्न प्रत्यास्मरण (पुनः स्मरण) कहलाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन की प्रविधि

मात्रात्मक प्रविधि (ज्ञान)
- → लिखित परीक्षा
  - → वस्तुनिष्ठ प्रश्न
  - → लघूत्तरात्मक प्रश्न
  - → निबंधात्मक प्रश्न
- → मौखिक परीक्षा
- → प्रायोगिक परीक्षा

गुणात्मक प्रविधि (भाव+क्रिया)
- → अनुसूची
- → प्रश्नावली (विलियमवुडवर्थ)
- → साक्षात्कार
- → समाजमिति-(मोरेनो)
- → रेटिंग स्केल (थर्स्टन केली)
- → जाँच सूची

Imp वस्तुनिष्ठ प्रश्न 6 प्रकार के होते हैं-
(1) वैकल्पिक प्रश्न
(2) अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न (NCERT 2018 में शामिल किया)
(3) क्रम निर्धारण प्रश्न
(4) सुम्मेलित करो प्रश्न
(5) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो प्रश्न
(6) सत्य / असत्य प्रश्न

Notes By
R. K. Jangid
8209022797

पृच्छा प्रतिमान / Inquary Model.

→ इसके प्रवर्तक सचमेन / सकमैन माने जाते हैं।
(यह इलिनियास (USA) विश्वविद्यालय के भौतिक शास्त्री एवं नैतिक शास्त्री माने जाते हैं।)

→ इन्होंने यह प्रतिमान 1962 में विकसित किया था।

यह शिक्षण का एक ऐसा प्रतिमान है जिसमें विद्यार्थी स्वयं सक्रिय होकर समस्या से सम्बंधित नवीन ज्ञान की प्राप्ति करता है और उसके समाधान हेतु विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछता है, साक्षात्कार करता है, निष्कर्ष निकालता है, तथ्यों का संकलन करता है।

Scanned with CamScanner

→ यह प्रतिमान वैज्ञानिक पद्धति के समान होता है जिसकी कार्यप्रणाली ह्यूरिस्टिक विधि एवं समस्या समाधान विधि के समान है।

Thanks
and
Best of luck For Future

Ramesh Jangid
Sanchore (Jalore)
8209022797

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner